सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 144, नई दिल्ली । रविवार, 04 अगस्त 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा ।

03 "आप" ने की एलजी निवास पर जमकर की नारेबाजी
06 डॉक्टरों और इंजीनियरों से परे शुद्ध विज्ञान में करियर तलाशना
08 सोनिया गांधी को पत्र लिखकर तुरंत पीसीसी अध्यक्ष नियुक्त करने का प्रस्ताव दिया

दिल्ली मेट्रो का चौथा फेज जल्द होगा शुरू

जनकपुरी से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन के बीच चलेगी मेट्रो

फेज चार के कॉरिडोर पर जनकपुरी पश्चिम से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन के बीच जल्द मेट्रो का परिचालन शुरू होगा। यह कॉरिडोर फेज चार में निर्माणाधीन जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर का हिस्सा होगा। जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर वर्तमान समय में मजेंटा लाइन का हिस्सा है। इसके हो जाने से कृष्ण पार्क के आसपास की कालोनियों के अलावा विकासपुरी के लोगों को भी फायदा मिलेगा।

संजय बाटला

नई दिल्ली। फेज चार के जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर के ढाई किलोमीटर हिस्से पर जल्दी मेट्रो का परिचालन शुरू हो जाएगा। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) को सिर्फ अब मेट्रो रेल संरक्षा आयुक्त (सीएमआरएस) से स्वीकृति मिलने का इंतजार है।

जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर का है हिस्सा

सीएमआरएस से हरी झंडी मिलते ही जनकपुरी पश्चिम से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन के बीच मेट्रो चलने लगेगी। यह कॉरिडोर फेज चार में निर्माणाधीन करीब 29 किलोमीटर लंबी जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर का हिस्सा है।

कृष्ण पार्क एक्सटेंशन नया स्टेशन बना

जनकपुरी पश्चिम से कृष्णा पार्क के बीच ढाई किलोमीटर का भूमिगत कॉरिडोर बनकर तैयार हो चुका है। इस कॉरिडोर पर कृष्ण पार्क एक्सटेंशन नया स्टेशन बनाया गया है। मंगलवार को सीएमआरएस (CMRS) ने इस कॉरिडोर व कृष्ण पार्क एक्सटेंशन के सुरक्षा मानकों का निरीक्षण किया। उम्मीद है कि परिचालन के लिए डीएमआरसी को जल्दी स्वीकृति मिल जाएगी।

जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर वर्तमान मजेंटा लाइन का हिस्सा है। इसलिए जनकपुरी पश्चिम से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन के बीच मेट्रो का परिचालन शुरू होने से मजेंटा लाइन पर नोएडा के बोटैनिकल गार्डन से सीधे कृष्ण पार्क एक्सटेंशन तक मेट्रो उपलब्ध हो पाएगी। इससे कृष्ण पार्क के आसपास की कालोनियों के अलावा विकासपुरी के लोगों को भी फायदा होगा।

ठेकेदार की मनमानी, एमसीडी बेबस, वाहन चालकों को नहीं मिलती पर्ची; खो जाने पर नहीं कोई जवाबदेही

गीता कॉलोनी दस ब्लॉक में दिल्ली नगर निगम की पार्किंग में ठेकेदार की जमकर मनमानी चल रही है। लोगों का आरोप है कि ठेकेदार की मनमानी के आगे निगम बेबस है। वह सड़क पर भी अवैध पार्किंग चला रहा है और वाहन खड़ा करने वालों को पर्ची भी नहीं मिलती है। अगर चोरी हो जाए तो कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती है।

नई दिल्ली। गीता कॉलोनी दस ब्लॉक में दिल्ली नगर निगम की पार्किंग में ठेकेदार की जमकर मनमानी चल रही है। पार्किंग में वाहन खड़े करने वाले लोगों को पार्किंग की पर्ची ही नहीं दी जा रही है। निगम ने पार्किंग के लिए जितना हिस्सा तय किया हुआ है, उससे अधिक हिस्से में अवैध पार्किंग करवाई जा रही है।

इतना ही नहीं इस पार्किंग में वाहन खड़ा करना हर किसी की बस की बात नहीं है। उन्हीं वाहनों को खड़ा करवाया जाता है जिनके मालिक एक माह का शुल्क देते हैं। इस तरफ निगम का कोई ध्यान ही नहीं है।

ठेकेदार के आगे निगम बेबस

गीता कॉलोनी दस ब्लॉक में निगम की अधिकृत पार्किंग चल रही है। लोगों का आरोप है कि ठेकेदार की मनमानी के आगे निगम बेबस है। निगम से सांठगांठ करके पार्किंग का ठेकेदार सड़क पर भी अवैध रूप से भी पार्किंग चला रहा है। पर्ची किसी को नहीं दी जाती है। अगर कोई वाहन चोरी हो गया तो ठेकेदार यह कहकर बच जाएगा कि पार्किंग की पर्ची दिखाओ। निगम आयुक्त को मामले को गंभीरता से देखना चाहिए।

पेट्रोल खत्म होने पर बृहस्पतिवार रात को मैंने अपनी मोटरसाइकिल पार्किंग में खड़ी थी, पर्ची मांगने पर भी ठेकेदार ने नहीं दी। डर लगा रहा था अगर मोटरसाइकिल चोरी हो गई तो ठेकेदार तो अपनी बात से मुकर जाएगा। -सौरभ, निवासी गांधी नगर।

पार्किंग में पर्ची किसी को नहीं दी जाती है। शुरुआत से ही यहां पार्किंग ऐसे ही चल रही है, सबको पता है। जिसको जो करना है वह कर सकता है। किसी को पर्ची चाहिए तो वह दूसरी पार्किंग में वाहन खड़ा कर सकता है। जो एक माह का शुल्क देता है उसके वाहनों को ही खड़ा करवाया जाता है। -पार्किंग संचालक।

सारा मामला निगम के इंस्पेक्टर को बताया था। जिसके बाद अधिकारी ने ठेकेदार से बात की है और हर वाहन चालक को पर्ची देने के लिए कहा है। अगर ठेकेदार ऐसा नहीं करता है तो उसपर जुर्माना लगाया जाएगा। -संदीप कपूर, स्थानीय पार्षद

फेम-3 योजना पूरी होने के करीब, समयसीमा की घोषणा करना अभी बाकी, केंद्रीय मंत्री ने दी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। फेम योजना के तीसरे चरण की अंतिम तैयारी चल रही है, लेकिन अभी इसकी समय सीमा के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता है।

केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने हाल ही में एक उद्योग कार्यक्रम के दौरान मीडिया से बात करते हुए कहा कि फेम III के कार्यान्वयन की तैयारी चल रही है और मंत्रालयों ने कार्यक्रम को कैसे लागू किया जाए, इस बारे में सिफारिशें की हैं।

भारत में इलेक्ट्रिक या हाइब्रिड वाहनों को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए भारी उद्योग मंत्रालय ने 2015 में फेम योजना तैयार की थी।

योजना का पहला चरण मार्च 2019 तक उपलब्ध था, जिसका बजट परिव्यय 895 करोड़ रुपये था। फेम इंडिया योजना के इस चरण में चार फोकस क्षेत्र थे - तकनीकी विकास, मांग सृजन, पायलट प्रोजेक्ट और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर कंपोनेंट्स।

इस योजना के पहले चरण में लगभग 2.8 लाख हाइब्रिड वाहनों को लगभग 359 करोड़ रुपये की कुल मांग प्रोत्साहन के साथ समर्थन दिया गया था। इसके अलावा, योजना के पहले चरण के तहत स्वीकृत 425 इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड बसों को देश के विभिन्न शहरों में लगभग 280 करोड़ रुपये के सरकारी प्रोत्साहन के साथ तैनात किया गया था। भारी उद्योग मंत्रालय ने चरण-I के तहत लगभग 43 करोड़ रुपये (लगभग) की लागत से लगभग 520 चार्जिंग स्टेशन/इन्फ्रास्ट्रक्चर को भी मंजूरी दी थी।

प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाओं के लिए लगभग 158 करोड़ रुपये की परियोजनाओं को मंजूरी दी गई थी। जैसे कि परीक्षण बुनियादी ढांचे की स्थापना, इलेक्ट्रिक परिवहन, बैटरी इंजीनियरिंग आदि में एडवांस्ड रिसर्च के लिए एक 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' की स्थापना। इसके लिए ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ARAI), आईआईटी मद्रास, आईआईटी कानपुर, नॉन-फेरस मटेरियल टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट सेंटर (एनएफटीडीसी), अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) आदि जैसे विभिन्न संगठनों/संस्थानों को प्रोजेक्ट दी गई।

चरण I के दौरान हासिल नतीजों और अनुभव के आधार पर और उद्योग और उद्योग संघों सहित सभी हितधारकों के साथ विचार-विमर्श करने के बाद, सरकार ने अप्रैल 2019 से शुरू होने वाले पांच वर्षों के लिए कुल बजटीय सहायता 11,500 करोड़ रुपये के साथ चरण II को अधिसूचित किया।

इस चरण-II में मुख्य रूप से सार्वजनिक और साझा परिवहन के विद्युतीकरण का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। और मांग प्रोत्साहन के जरिए 7,262 ई-बस, 1,55,536 ई-3 व्हीलर, 30,461 ई-4 व्हीलर यात्री कार और 15,50,225 ई-2 व्हीलर का समर्थन करने का लक्ष्य रखा गया था। इसके अलावा, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण भी योजना के तहत समर्थित है।

पार्यावरण पाठशाला: मेंढक, केंचुए और अन्य पारिस्थिति की तंत्र के साथी जो समाज के लिए अच्छे हैं : अंकुर

पार्यावरण का महत्व और उसके विभिन्न घटकों का योगदान हमें हमारी जीवनशैली में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। पार्यावरण पाठशाला के अंतर्गत हम उन घटकों की चर्चा करेंगे जो हमारे समाज और पर्यावरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें से प्रमुख हैं मेंढक, केंचुए और अन्य पारिस्थितिकी तंत्र के साथी।

मेंढक

मेंढक पारिस्थितिकी तंत्र के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। ये छोटे जीव पर्यावरण के स्वास्थ्य का संकेत देते हैं। मेंढक जल और भूमि दोनों में रहते हैं, जिससे वे प्रदूषण और पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। मेंढक के लार्वा मच्छरों के लार्वा को खाते हैं, जिससे मच्छरों की जनसंख्या नियंत्रित रहती है। इसके अलावा, मेंढक छोटे कीटों और अन्य छोटे जीवों को खाते हैं, जिससे कीटों की संख्या नियंत्रण में रहती है और खेती में होने वाले नुकसान कम होते हैं। मेंढक विभिन्न प्रकार के रोगों के प्रसार को रोकने में भी मदद करते हैं।

केंचुए

केंचुए भूमि की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये जीव मिट्टी को खोदकर और उसके अंदर के जैविक पदार्थों को मिलाकर उसे उपजाऊ बनाते हैं। केंचुए मिट्टी में नाइट्रोजन और अन्य पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाते हैं, जिससे पौधों की वृद्धि में सहायता मिलती है। केंचुए जैविक पदार्थों को तोड़कर ह्यूमस बनाते हैं, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होता है। केंचुओं की यह गतिविधि जैविक खेती और बागवानी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अन्य पारिस्थितिकी तंत्र के साथी

इसके अलावा, अन्य पारिस्थितिकी तंत्र के साथी जैसे मधुमक्खियां, तितलियां, चूहे, पक्षी आदि भी हमारे पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण हैं। मधुमक्खियां परागण में मदद करती हैं, जिससे फूलों और फलों का उत्पादन बढ़ता है। तितलियां भी परागण में मदद करती हैं और जैव विविधता को बनाए रखती हैं। चूहे और अन्य छोटे स्तनपायी बीज फैलाने में मदद करते हैं, जिससे नए पौधों का जन्म होता है।

मेंढक, केंचुए और अन्य पारिस्थितिकी तंत्र के साथी हमारे पर्यावरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन जीवों के बिना हमारा पारिस्थितिकी तंत्र संतुलन में नहीं रह सकता। हमें इन जीवों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए। हमें यह समझना होगा कि ये जीव हमारे पर्यावरण के स्वास्थ्य के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं और इनका संरक्षण हमारे ही हित में है। पार्यावरण पाठशाला के माध्यम से हम इन जीवों के महत्व को समझ सकते हैं और समाज में उनकी भूमिका के प्रति जागरूकता फैला सकते हैं।

हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ और स्वस्थ बनाए रखने के लिए इन पारिस्थितिकी तंत्र के साथियों का संरक्षण करें और उनकी संख्या को बनाए रखें। इस प्रकार हम एक संतुलित और स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

indiangreenbuddy@gmail.com

संस्कारशाला: जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए अनुशासन और कृतज्ञता

प्रियंका श्रीवास्तव

संस्कार और कृतज्ञता मानव जीवन के महत्वपूर्ण पहलू हैं जो व्यक्ति को जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करते हैं। अनुशासन वह गुण है जो हमें अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान बनाता है। यह हमें अपने समय और संसाधनों का सही उपयोग करना सिखाता है, जिससे हम अपनी और समाज की प्रगति में योगदान कर सकते हैं। अनुशासन का पालन करने वाले व्यक्ति न केवल अपने जीवन को सुगम और संगठित बनाते हैं, बल्कि वे समाज में भी एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

कृतज्ञता वह भावना है जो हमें दूसरों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें हमारे जीवन में मिलने वाली सभी छोटी-बड़ी सहायता और सहयोग के प्रति सचेत और आभारी बनाती है। कृतज्ञता से भरे हुए लोग न केवल अपने संबंधों को मजबूत करते हैं, बल्कि वे समाज में भी एक स्वस्थ और सहायक वातावरण का निर्माण करते हैं।

जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए अनुशासन और कृतज्ञता दोनों आवश्यक हैं। जब हम अनुशासन का पालन करते हैं, तो हम अपने कार्यों को समय पर और सही ढंग से पूरा कर पाते हैं। इससे न केवल हमें व्यक्तिगत संतोष मिलता है, बल्कि समाज में भी हमारी विश्वसनीयता और सम्मान बढ़ता है। दूसरी ओर, जब हम कृतज्ञता का प्रदर्शन करते हैं, तो हम दूसरों के प्रति विनम्र और सहयोगी बनते हैं, जिससे समाज में आपसी समझ और सहयोग की भावना बढ़ती है।

अनुशासन और कृतज्ञता के माध्यम से हम समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। जब हम अपने बच्चों को इन मूल्यों का महत्व समझाते हैं और उन्हें अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, तो हम एक जिम्मेदार और संगठित समाज की नींव रखते हैं। यह हमारे समाज को अधिक समृद्ध और खुशहाल बनाने में मदद करता है।

इस प्रकार, अनुशासन और कृतज्ञता न केवल व्यक्तिगत सफलता की कुंजी हैं, बल्कि ये समाज में भी शांति, सहयोग और समृद्धि का आधार बनते हैं। जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए इन मूल्यों का पालन अनिवार्य है, और यही हमारे समाज को एक उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होगा।

बच्चों के लिए दैनिक जीवन में कृतज्ञता प्रदर्शित करने के महत्वपूर्ण टिप्स

कृतज्ञता एक ऐसा गुण है जो हमें जीवन में मिलने वाली हर छोटी-बड़ी चीज़ की सराहना करना सिखाता है। बच्चों को यह गुण सिखाना उन्हें जिम्मेदार और विनम्र नागरिक बनने में मदद करता है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण टिप्स दिए गए हैं जिनसे बच्चे अपने दैनिक जीवन में कृतज्ञता प्रदर्शित कर सकते हैं:

धन्यवाद कहना सिखाएं: बच्चों को हर छोटी-बड़ी मदद के लिए 'धन्यवाद' कहना सिखाएं। चाहे कोई उन्हें खिलौना दे या उनकी मदद करे, उन्हें यह आदत डालें कि वे हमेशा आभार व्यक्त करें।

अपने पास की चीज़ों की सराहना करें: बच्चों को सिखाएं कि वे अपने पास मौजूद चीज़ों की सराहना करें, चाहे वह उनके खिलौने हों, किताबें हों, या परिवार और दोस्त। इससे वे समझेंगे कि उन्हें जो मिला है वह महत्वपूर्ण है।

परिवार के समय को महत्व दें: बच्चों को यह सिखाएं कि वे अपने परिवार के साथ बिताए समय की कदर करें। यह उन्हें अपने माता-पिता और भाई-बहनों के प्रति कृतज्ञ होने का महत्व समझाएगा।

दूसरों की मदद करें: बच्चों को सिखाएं कि वे जब भी मौका मिले, दूसरों की मदद करें। इससे वे समझेंगे कि कृतज्ञता केवल लेना ही नहीं, बल्कि देना भी है।

शिक्षकों और दोस्तों का सम्मान करें: बच्चों को यह सिखाएं कि वे अपने शिक्षकों और दोस्तों के प्रति कृतज्ञता दिखाएं। यह उन्हें उनके संबंधों को मजबूत बनाने में मदद करेगा।

प्रकृति का सम्मान करें: बच्चों को यह सिखाएं कि वे प्रकृति के प्रति कृतज्ञ हों। उन्हें पेड़-पौधों की देखभाल करने, जानवरों का सम्मान करने और पर्यावरण को स्वच्छ रखने की आदत डालें।

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें: बच्चों को सिखाएं कि वे अपने स्वास्थ्य के प्रति कृतज्ञ रहें। उन्हें नियमित व्यायाम करने, स्वस्थ भोजन करने और स्वच्छता बनाए रखने की आदत डालें।

दैनिक आभार डायरी लिखें: बच्चों को एक आभार डायरी रखने के लिए प्रोत्साहित करें, जिसमें वे रोज़ाना तीन चीज़ें लिखें जिनके लिए वे कृतज्ञ हैं। यह उन्हें सकारात्मक सोचने और छोटी-छोटी खुशियों की सराहना करने में मदद करेगा।

अनुभवों की सराहना करें: बच्चों को यह सिखाएं कि वे अपने अनुभवों, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, की सराहना करें। इससे वे जीवन की हर स्थिति से कुछ नया सीख पाएंगे।

माफी मांगना और माफ करना सिखाएं: बच्चों को यह सिखाएं कि वे अपनी गलतियों के लिए माफी मांगें और दूसरों को माफ करें। यह उनके मन में कृतज्ञता और सहानुभूति की भावना को बढ़ाएगा।

इन टिप्स के माध्यम से, बच्चे अपने दैनिक जीवन में कृतज्ञता को शामिल कर सकेंगे और एक सकारात्मक और संतुलित दृष्टिकोण के साथ बड़े हो सकेंगे।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

हरियाली अमावस्या पर पिंडदान होता है शुभ

पंडितों के अनुसार सावन के महीने में कृष्ण पक्ष की शिवरात्रि के अगले दिन हरियाली अमावस्या होती है।

4 अगस्त को हरियाली अमावस्या है, सावन माह की अमावस्या तिथि को हरियाली अमावस्या के रूप में मनाया जाता है। हरियाली अमावस्या को बहुत ही शुभ माना जाता है, तो आइए हम आपको हरियाली अमावस्या व्रत के महत्व एवं व्रत की विधि के बारे में बताते हैं।

जानें हरियाली अमावस्या के बारे में

वैसे तो हरियाली अमावस्या हरियाली तीज से तीन दिन पहले आती है। इस दिन पेड़-पौधे लगाने का विशेष महत्व है। इस दिन पूर्वजों के निमित्त पिंडदान एवं दान-पुण्य के कार्य किए जाते हैं। हरियाली अमावस्या के दिन किसी पवित्र नदी में स्नान करके पितरों को पिंडदान, श्राद्ध कर्म करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस साल सावन माह की अमावस्या 4 अगस्त को हरियाली अमावस्या के रूप में मनाई जाएगी।

हरियाली अमावस्या सावन माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या के दिन मनाई जाती है। इस वर्ष हरियाली अमावस्या पर चार शुभ संयोग बनने से इस बार श्रावण अमावस्या विशेष शुभ मानी जा रही है। हरियाली अमावस्या का इंतज़ार साल भर रहता है क्योंकि यह पौधे लगाने का सबसे अच्छा समय माना जाता है। इस समय बारिश के कारण पूरी धरती पर खूब हरियाली होती है और प्रकृति की सुंदरता देखने लायक होती है।

हरियाली अमावस्या का है खास महत्व

पंडितों के अनुसार सावन के महीने में कृष्ण पक्ष की शिवरात्रि के अगले दिन हरियाली अमावस्या होती है। इस दिन पेड़-पौधों की विशेष रूप से पूजा की जाती है। इस दिन पीपल और तुलसी के पौधे की पूजन का विशेष महत्व है। शास्त्रों के अनुसार पीपल के पेड़ में त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास माना जाता है।

हरियाली अमावस्या पर लगाए जाते हैं ये पौधे

हरियाली अमावस्या के दिन अगर कोई व्यक्ति कुछ विशेष वृक्षों को रोपकर उनकी देखरेख करने का प्रण लेता है तो उसके जीवन में समृद्धि बनी रहती है। सावन में हरियाली अमावस्या पर शिव-पार्वती पूजन के साथ ही तुलसी, आम, बरगद, नीम आदि के पौधे रोपने से देव और पितृ दोनों प्रसन्न होते हैं। शास्त्रों में विशेषकर आम, आंवला, पीपल, वट वृक्ष और नीम के पौधों को रोपने का विशेष महत्व बताया गया है।

हरियाली अमावस्या पर पितरों की शांति के लिए करें उपाय

पंडितों के अनुसार हरियाली अमावस्या के दिन किसी योग्य ब्राह्मण को घर बुलाकर भोजन करवाएं। इस दिन किसी नदी किनारे श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान करें। साथ ही गाय को चारा भी खिलाएं। हरियाली अमावस्या के दिन मछलियों के लिए नदी में आटे की गोलियां डालें। नदी में काले तिल को प्रवाहित करें।

हरियाली अमावस्या से जुड़ी पौराणिक कथा

शास्त्रों के अनुसार बहुत समय पहले एक राजा प्रतापी राजा था। उनका एक बेटा और एक बहू थे। एक दिन बहू ने चोरी से मिठाई खा लिया और नाम चूहे का लगा दिया। जिसकी वजह से चूहे को बहुत गुस्सा आ गया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि चोर को राजा के सामने लेकर आऊंगा। एक दिन राजा के यहां कुछ मेहमान आयें हुए थे। सभी मेहमान राजा के कमरे में सोये हुए थे। बदले की आग में जल रहे चूहे ने रानी की साड़ी ले जाकर उस कमरे में रख दिया। जब सुबह मेहमान की आंखें खुली और उन्होंने रानी का कपड़ा देखा तो हैरान रह गए। जब राजा को इस बात का पता चला तो उन्होंने अपनी बहू को महल से निकाल दिया।

रानी रोज शाम में दिया जलाती और ज्वार उगाने का काम करती थी। रोज पूजा करती गुडधानी का प्रसाद बांटती थी। एक दिन राजा उस रास्ते से निकल रहे थे तो उनकी नजर उन दीयों पर पड़ी। राजमहल लौटकर राजा ने सैनिकों को जंगल भेजा और कहा कि देखकर आओ वहां क्या चमत्कारी चीज थी। सैनिक जंगल में उस पीपल के पेड़ के नीचे गए। उन्होंने वहां देखा कि दीये आपस में बात कर रही थी। सभी अपनी-अपनी कहानी बता रही थीं। तभी एक शांत से दीये से सभी ने सवाल किया कि तुम भी अपनी कहानी बताओ। दीये ने बताया वह रानी का दीया है। उसने आगे बताया कि रानी की मिठाई चोरी की वजह से चूहे ने रानी की साड़ी मेहमानों के कमरें में रखा था और बेकसूर रानू को सजा मिल गई। सैनिकों ने जंगल की सारी बात राजा को बताई। जिसके बाद राजा ने रानी को वापस महल बुलवा लिया। जिसके बाद रानी खुशी-खुशी राजमहल में रहने लगी।

हरियाली अमावस्या पर ऐसे करें पूजा

पंडितों के अनुसार महिलाओं को सुबह उठकर पूरे विधि विधान से माता पार्वती एवं भगवान शंकर की पूजा करनी चाहिए तथा सुहागन महिलाओं को सिंदूर सहित माता पार्वती की पूजा करना चाहिए और सुहाग सामग्री बांटना चाहिए। ऐसा मानना है कि हरी चूड़िया, सिंदूर, बिंदी बांटने से सुहाग की आयु लंबी होती है और साथ ही घर में खुशहाली आती है। अच्छे भाग्य के उद्देश्य से लड़के भी चूड़ियां, मिठाई आदि सुहागन स्त्रियों को भेट कर सकते हैं। लेकिन यह कार्य दोपहर से पहले कर लेना चाहिए। हरियाली अमावस्या के दिन भक्तों को पीपल और तुलसी के पेड़ की पूजा करना चाहिए। इस दिन पीपल के वृक्ष की पूजा एवं फेरे किये जाते है तथा मालपुए का भोग बनाकर चढाये जाने की परंपरा है। धार्मिक ग्रंथों में पर्वत और पेड़-पौधों में भी ईश्वर का वास बताया गया है। पीपल में त्रिदेवों का वास माना गया है। आंवले के पेड़ में स्वयं भगवान श्री लक्ष्मीनारायण का वास माना जाता है। इस दिन कई लोग उपवास भी रखते हैं। इसके बाद शाम को भोजन ग्रहण कर व्रत तोड़ा जाता है। मान्यता है कि जो लोग श्रावण मास की अमावस्या को व्रत करते हैं, उन्हें धन और वैभव की प्राप्ति होती है। इस दिन पवित्र नदियों में स्नासन के बाद ब्राह्मणों, गरीबों को यथाशक्ति दान-दक्षिणा करनी चाहिए।

जानें हरियाली अमावस्या 2024 का शुभ मुहूर्त

हरियाली अमावस्या के दिन ब्रह्म मुहूर्तः प्रातः 04:20 से प्रातः 05:02 तक

अभिजीत मुहूर्तः दोपहर 12:00 से दोपहर 12:54 तक

हरियाली अमावस्या पर स्नान दान का शुभ समयः प्रातः 05:44 से दोपहर 01:26 तक

हरियाली अमावस्या के दिन बन रहे कई शुभ मुहूर्त

हरियाली अमावस्या के दिन कई शुभ मुहूर्त बन रहे हैं जिससे इन दिन का महत्व बढ़ रहा है। अमावस के दिन रवि पुष्य योग व सर्वार्थ सिद्धि योग भी बन रहा है। रवि पुष्य योग सुबह 05:43 से दोपहर 01:26 बजे तक रहेगा। इसके साथ ही सर्वार्थ सिद्धि योग सुबह 05:43 बजे से दोपहर 01:26 बजे तक रहेगा।

मानसून के मौसम में पेट फूलने और कब्ज की समस्या से परेशान हो गए हैं, तो आहार में इन चीजों को करें शामिल करें

अक्सर बरसात के मौसम में पेट फूलना और कब्जी की समस्या उत्पन्न होती रहती है।

बारिश के मौसम में कई बार पेट संबंधित समस्या होती रहती है। बरसात के मौसम में स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है। ऐसे में पाचनतंत्र को मजबूत बनाने के लिए आप अपने डाइट में हेल्दी खाद्य पदार्थों को शामिल किया जा सकता है। आइए जानते हैं आंत के बेहतर स्वास्थ्य के लिए कौन से फूड हैं फायदेमंद।

प्रोबायोटिक्स का करें सेवन

अपनी डाइट में प्रोबायोटिक्स को शामिल करने से गुड गट बैक्टीरिया की मात्रा बढ़ने लगती है, जिससे डाइजेशन बूस्ट होता है। इससे ब्लोटिंग, अपच और पेट दर्द की समस्या हल हो जाती है। प्रोबोयोटिक्स से इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है और बॉवल मूवमेंट भी नियमित होने लगती है।

पत्तेदार सब्जियां खाएं

पत्तेदार सब्जियां खाने से शरीर को विटामिन, मिनरल और प्रीबायोटिक्स की प्राप्ति होती। इससे पाचनतंत्र भी मजबूत होता है और शरीर एनर्जी का प्रवाह उचित बना रहता है।

फाइबर रिच आहार लें

हेल्दी बैक्टीरिया प्रोड्यूस करने और कब्ज से राहत पाने के लिए फाइबर रिच फूड का सेवन करना सबसे उत्तम माना जाता है। सॉल्यूबल और इनसॉल्यूबल फाइबर आंत के हेल्द के लिए फायदेमंद साबित होती है। इससे डाइजेस्टिव समस्याएं हल हो जाती है और ब्लोटिंग में राहत मिलती है।

अदरक का सेवन जरुरी

दरअसल, अदरक से गट माइक्रोब्योम में वृद्धि होती है और गट हेल्थ भी बेहतर होती है। यह इंटेस्टाइन के लिए बेहद लाभकारी होती है और इन्फ्लामेशन दूर होने लगती है। अदरक को आहार में शामिल करने से इंटेस्टाइनल वॉर्म की समस्या भी हल होती है। आप अदरक की चाय, सूप में एड करके या शहद के साथ अदरक के रस का सेवन कर सकते हैं।

सोयाबीन खाएं

सोयाबीन में खूब प्रोटीन पाया जाता है। यह एक प्लांट बेस्ड आहार है। सोयाबीन के सेवन से मेटाबॉलिक हेल्थ बूस्ट होती है और शरीर को उच्च पोषण की प्राप्ति होती है। इसे खाने से गट क्वीनिंग में मदद मिलती है और फैट डिपोजिट जमा हो।

30 की उम्र से पहले भारत की इन जगहों पर नहीं घूमें तो क्या ही घूमा, ये हैं 9 शानदार जगहें

अगर आप घूमने के शौकीन हैं तो आप अभी तक इन जगहों पर नहीं घूमे तो क्या ही घूमा है। यह है भारत की सबसे शानदार जगहें जहां घूमकर काफी मजा आता है। सबसे खूबसूरत जगहें हैं ये, जहां आप घूमकर काफी एन्जॉय कर सकते हैं। आइए जानते हैं यह शानदार जगहें।

गोवा

पार्टी और बीचेज के लिए सबसे फेमस है गोवा। यहां आपको सुंदर समुद्री बीचेज और वाटर एक्टीविटीज करने के लिए सबसे बेहतर जगह है। यहां नाइट आउट पार्टी कर सकते हैं। क्रूज का मजा ले सकते हैं। क्लब पार्टी कर सकते हैं और समुद्र किनारे बैठकर काफी सुकून मिलता है।

आगरा

आगरा में सबसे ज्यादा फेमस तो ताज महल है। यहां आसपास देखने को लिए कई एतिहासिक फॉर्ट है। अगर आप आगरा घूमने की सोच रहे हैं तो यह समय सबसे बढ़िया है। यहां आप ताजमहल, आगरा फॉर्ट, एतमाद-उद-दौला, अकबर का मकबरा, श्री मनकामेश्वर मंदिर, ताज नेचर वॉक, आराम बाग और पालीवाल पार्क व बुलंद दरबाजा देखने जा सकते हैं।

लद्दाख

लद्दाख की खूबसूरत घाटियों और पहाड़ियों के साथ आप नदी, झील और झरनों का मजा लें सकते हैं। यहां बर्फ से घिरे पहाड़ो का सुंदर नजारा देखने को मिल जाएगा। यह जगह किसी जन्नत से कम नहीं है। अगर आप इस जगह को घूम लेंगे तो भूल नहीं पाएंगे।

उदयपुर

राजस्थान के उदयपुर घूमने पर के लिए सबसे शानदार जगह है। उदयपुर को झीलों का शहर कहा जाता है। इस जगह की खूबसूरती

भारत की सबसे खूबसूरत जगहें जहां हर एक भारतीय को जाना चाहिए।

आपको बहुत पसंद आएगी। यहां नाव का मजा ले सकते हैं। आप सिटी प्लेस, जगदीश मंदिर, सज्जनगढ किला, लेक पिछोला और फतेह सागर लेक घूम सकते हैं।

मुंबई

मुंबई जिसे सपनों का शहर भी शहर कहते हैं, 30 की उम्र से पहले आपको यहां गेटवे ऑफ इंडिया, खूबसूरत बंदरगाह जरुर घूमना चाहिए। यह जगह घूमने के लिए बेहद शानदार है। मुंबई के आसपास कई हिल स्टेशन मौजूद है, जहां मानसून में खूबसूरती चरम पर होती है।

केरल

साउथ इंडिया में घूमने के लिए कई शानदार जगहें इन्हीं में से एक है केरल। केरल को देव का शहर कहते हैं। यहां आप प्राचीन मंदिरों के साथ चाय के बागानों को भी एक्सप्लोर कर सकते हैं। केरल में कई सुंदर बीचेस भी जहां आप घूम सकते हैं।

वाराणसी

अगर आप बनारस घूमने का प्लान बना रहे हैं तो इन जगहों पर घूमने जाएं। बनारस में प्रसिद्ध तीर्थ स्थल से लेकर कई पर्यटक स्थल भी मौजूद है। यहां आप काशी विश्वनाथ मंदिर, दशाश्वमेध घाट, अस्सी घाट घूम सकते हैं। वहींस बनारस के नजदीक सरनाथ, चुनार का किला और लखनिया दरी भी देख सकते हैं।

खुजराहो

खुजराहो मध्य प्रदेश में स्थित है। वैसे तो खुजराहो अपने मंदिरों और बेहद सुंदर आर्किटेक्चर के लिए फेमस है। यहां पर आप अपने परिवार और पार्टनर दोनों के साथ घूमने जा सकते हैं।

ऋषिकेश

ऋषिकेश में आपको 30 की उम्र से पहले राम झूला और लक्ष्मण झूला के साथ आप कैंपिग और राफ्टिंग का मजा ले सकते हैं। आप यहां राम झूला, त्रिवेणी घाट, लक्ष्मण झूला, गंगा बीच, गीता भवन, श्री नीलकंठ महादेव मंदिर और ऋषिकेश में रिवर राफ्टिंग कर सकते हैं। इस जगह पर फैमिली के साथ काफी मजा आता है।

बड़ौदा की सबसे खूबसूरत महारानी, सादगी भरे सिंपल साड़ी लुक्स से आप भी ले सकते हैं सीख

बड़ौदा की महारानी राधिकाराजे गायकवाड़, जिन्हें सामान्य जीवन जीना पसंद है।

बड़ौदा की महारानी जिनका जन्म वांकानेर शाही परिवार में हुआ था और इसके बाद बड़ौदा के महाराजा से शादी की थी, लेकिन राधिकाराजे गायकवाड़ इस धारणा से दूर रहती हैं कि उनका जीवन असाधारण रहा है। उनके पिता, वांकानेर के महाराजकुमार डॉ. रणजीतसिंहजी, अपनी उपाधि छोड़कर आईएएस अधिकारी बनने वाले पहले व्यक्ति थे। बड़ौदा की महारानी राधिकाराजे गायकवाड़ को भारत की सबसे खूबसूरत और मॉर्डन महारानी कहा जाता है। इन ड्रेसिंग सेंस भी बेहद कमाल का है। महारानी को आमतौर पर सिंपल साड़ियों कैरी किए हुए देखा जा सकता है। आप भी इनकी साड़ियों से इंस्पिरेशन ले सकते हैं।

लाइट पिंक साड़ी में दिखें रॉयल

महारानी लाइट पिंक साड़ी में बेहद खूबसूरत और रॉयल लुक को और एन्हांस कर रही है। लाइट वेट शिफॉन फैब्रिक से बनी हुई साड़ी पर रंग-बिरंगी बूटियों का काम हुआ है। समर सीजन में ये साड़ी एकदम परफेक्ट लगती है।

ब्राइट येलो शेड है काफी यूनिक

यह ब्राइट येलो कलर की साड़ी काफी ज्यादा खूबसूरत लग रही है। इस साड़ी के बॉर्डर पर आरी का वर्क हुआ है जो ओवरऑल साड़ी में चार्म एड कर रहा है। कंट्रास्टिंग रेड ब्लाउज पीस के साथ ऐसा कुछ आप भी अपने वॉर्डरोब का हिस्सा बना सकती हैं।

चिकनकरी साड़ी

अब चाहे चिकनकारी के सूट हों या साड़ी काफी सिंपल है लेकिन इसकी चिकनकारी की कढ़ाई इसे काफी ज्यादा रॉयल वाइब दे रही है। आप भी कुछ ऐसा अपने वॉर्डरोब में एड कर सकती हैं।

प्रिंटेड साड़ी

अगर आप गर्मियों के मौसम में हल्की-फुल्की कंफर्टेबल साड़ियां ढूंढ रही हैं तो महारानी के इस लुक से इंस्पिरेशन ले सकती हैं। सॉफ्ट सिल्क की इस सादी पर इकत प्रिंट हुआ है। जिस वजह से ये काफी रॉयल और क्लासी वाइब दे रही है।

रेलवे में करीब 63 हजार सेवा कर्मियों में मात्र 9.36 फीसद यानी 5900 महिला सुरक्षा कर्मी तैनात हैं

सुषमा रानी

नई दिल्ली, भारतीय रेलवे में महिला सुरक्षा कर्मियों की भारी कमी है। महिला सुरक्षा कर्मियों की यह कमी ट्रेनों में सफर करने वाली महिलाओं की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर रहा है। इस संबंध में आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह द्वारा रेल मंत्रालय से कई सवाल पूछे गए थे, जिनका मंत्रालय ने जवाब दे दिया है। मंत्रालय से मिले जवाब के मुताबिक ट्रेनों के आरक्षित डिब्बों में रोजाना सफर कर रही 66 लाख महिलाओं की सुरक्षा में 'मेरी सहेली' स्कीम के तहत मात्र 700 महिला सुरक्षा कर्मी ही तैनात हैं। जबकि रेलवे में करीब 63 हजार सेवा कर्मी तैनात हैं और इसमें मात्र 9.36 फीसद यानी 5900 महिला सुरक्षा कर्मी तैनात हैं।

संसद के मॉनसून सत्र में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह द्वारा भारतीय रेल में महिला यात्रियों की सुरक्षा के संबंध में पूछे गए अतारांकिक प्रश्न का जवाब रेल मंत्रालय द्वारा 25 जुलाई 2024 को दिया गया। केंद्र सरकार के जवाब में यह तथ्य सामने आया है कि भारतीय रेल में प्रतिदिन लगभग 66 लाख महिलाएं आरक्षित डिब्बों में यात्रा करती हैं। जिनकी सुरक्षा के लिए मात्र 700 महिला सुरक्षा कर्मी तैनात हैं। सरकार ने अपने जवाब में बताया कि स्कीम 'मेरी सहेली' के तहत 66 लाख महिला यात्रियों के लिए मात्र 700 महिला सुरक्षा कर्मी तैनात किये गए जो अपने आप में बहुत हीं चिंताजनक आंकडा है।

रेलवे सुरक्षा बल में रिक्तियों के संबंध में ₹आपर सांसद के सवाल पर सरकार ने बताया कि वर्तमान में लगभग 4660 पद रिक्त हैं। सुरक्षा में महिला सुरक्षा कर्मियों की भागीदारी के संबंध में पूछे गए प्रश्न पर सरकार ने बताया कि 63 हजार के लगभग सेवा कर्मियों में मात्र 9.36 फीसद महिला सुरक्षा कर्मी है। यानी महिला सुरक्षा कर्मियों की सख्या मात्र 5900 है, जबकि रेलवे 66 लाख से अधिक महिला प्रतिदिन यात्रा करती है। महिला आरपीएफ कर्मियों की भारी कमी के कारण भारतीय रेल में यात्रा करने वाली महिलाओं की सुरक्षा पर गंभीर प्रश्न चिन्ह उठता है। यह कमी महिला यात्रियों को कई तरह के जोखिमों में डाल सकती है।

शीला दीक्षित सरकार द्वारा बना इन्फ्रास्ट्रक्चर को केजरीवाल सरकार ने ध्वस्त कर दिया: देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि मानसून की बारिश होने पर ऐसा कोई दिन नही जब किसी न किसी हादसे में लोगों की जान नही गई है, बीते कल भी जहांगीर पुरी में दो मंजिला इमारत ढहने से महिला सहित तीन लोगों की मौत हुई, इसकी जिम्मेदारी तय की जाए कि हादसे में गई मौत के लिए कौन जिम्मेदार है। जहांगीर पुरी औद्योगिक क्षेत्र में हुए हादसे के दिल्ली नगर निगम प्रशासन का यह कहना कि क्षेत्र को डीडीए ने विकसित किया था और अभी तक निगम को नालों और सड़कों की मरम्मत काम नही सौंपा है। दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम आंखों पर पट्टी बांधी हुई है और राजधानी में में रोज गिरती इमारतों, करंट लगने और नालों में डूबकर मर रहे लोगों की जिंदगी से खिलवाड हो रहा है। सरकार मृतकों के परिवारजनों को मुआवजा दे।

उन्होंने आरोप लगाया कि राजधानी में लगातार हो रहे हादसों की जिम्मेदारी कोई लेने को तैयार नही है, हर दिन लोग मर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजेन्द्र नगर बेसमेंट कोचिंग हादसे पर दिल्ली कांग्रेस ने मांग की थी कि जांच सीबीआई के हाथों कराई जाए, हम दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा मामले की जाचं सीबीआई से कराने के आदेश का स्वागत करते है। यादव ने कहा कि क्या सरकारों के गैर जिम्मेदाराना रवैये और अपनी जिम्मेदारी से भागने की स्थिति में रोज हो रही सभी मौतों पर उच्च न्यायालय को संज्ञान लेना पड़ेगा या सरकारें भी इन मामलां के प्रति अपनी जवाबदेही तय करेंगी।

उन्होंने कहा कि राजेन्द्र नगर कोचिंग हादसे में जब कोर्ट ने साफ कर दिया है कि किसी ने किसी को तो जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि जल भराव, कंरट, इमारत गिरने से दबने, नाले खुले होने पर उनमें डूब कर लोग मर रहे तो दिल्ली की सरकारों और एजेंसियों को जिम्मेदारी के लेने मामले में पिछले एक महीने से भी अधिक समय से भाजपा और आम आदमी पार्टी लोगों की मौत पर राजनीति कर रही है, जो बहुत ही चिंताजनक है। मयूर विहार फेस 3 के खुले नाले में मॉ बेटे की गिरने मौत पर आम आदमी पार्टी का राज निवास पर प्रदर्शन करना और दिल्ली में अन्य हादसों पर भाजपा का दिल्ली सरकार के खिलाफ धरना करना कोरी राजनीति है। सरकारों को अपना दायित्व समझकर हादसे न हो इसके लिए पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार ने 15 वर्षों में राजधानी को विकसित बनाकर इन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा किया था खड़ा किया था मौजूदा सरकार उसकी देखभाल और रख-रखाव नही कर पाई और पिछले 10 वर्षों में मौजूदा सरकार ने राजधानी के रोड़, सड़क, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिल्डिंग, नाले सहित पूरे के पूरे इन्फ्रास्ट्रक्चर को ही ध्वस्त कर दिया है। विश्वस्तरीय दिल्ली का विकास सब कुछ सरकारों की निष्क्रियता, अक्षमता और बदले की राजनीति के चलते सब कुछ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया है। श्री देवेन्द्र यादव ने कहा कि सरकारों की निष्क्रियता, बढ़ते भ्रष्टाचार और अधिकारियों के राजनीतिक दवाब में काम करने की स्थिति, और मुख्यमंत्री की गैर मौजूदगी में दिल्ली के उपराज्यपाल और मुख्य सचिव को दिल्ली के बिगड़ते हालात में दुर्लभ जिम्मेदारी की जरुरत है।

धर्म निरपेक्ष नालंदा विश्वविद्यालय में पूर्ववत जैन दर्शन और प्राकृत भाषा पाठ्यक्रम आरंभ करने की विश्व जैन संगठन की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। विश्व जैन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय जैन ने कहा कि 19 जून 2024 को भारत के प्रधानमंत्री और बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर विश्वविद्यालय में जैन दर्शन और प्राचीन प्राकृत भाषा पाठ्यक्रम शामिल न किए जाने, नालंदा और राजगीर में जैन धर्म के प्रचलन में होने, भगवान महावीर द्वारा चातुर्मास किए जाने और यहां से खुदाई में प्राप्त प्राचीन जैन मंदिर और प्रतिमाओं का उल्लेख न करने का कारण समझ नहीं आया।

श्री संजय जैन ने बताया कि लोक सभा में 26 अगस्त 2020 को नालंदा विश्वविद्यालय बिल - 2010 पर चर्चा में चित्तौड़गढ़ सांसद डॉ गिरिजा व्यास द्वारा बिहार में 2500 वर्ष पूर्व गुणशिला यूनिवर्सिटी में महिलाओं के लिए जैन दर्शन की शिक्षा और कुंडलपुर में शारीरिक प्रशिक्षण दिए जाने की जानकारी देते हुए जैन नमोकार महामंत्र उल्लेख करते हुए यूनिवर्सिटी में धर्म निरपेक्षता के साथ अन्य धर्मों की शिक्षा के साथ - साथ जैन दर्शन सिद्धांत पढ़ाने की अनुशंसा की थी और सांसद श्री बाल आप्टे व अन्य सांसदों ने भी अनुमोदना की थी लेकिन वर्तमान में यूनिवर्सिटी में मात्र वैदिक और बौद्ध धर्म शिक्षा दिए जाना जैन दर्शन और प्राकृत के साथ भेदभाव है।

संगठन के अध्यक्ष ने कहा कि पुरातत्व विभाग द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में नालंदा का जैन ग्रंथों व भगवान महावीर द्वारा नालंदा में 14 चातुर्मास काल व्यतीत करने का उल्लेख करने और प्राचीन विश्वविद्यालय के समय 4-5 वी सदी के प्राचीन जैन मंदिर व इसमें 15वी सदी की भगवान महावीर की प्रतिमा की खोज की थी और नालंदा विहार क्रमांक 1 से ऋषभदेव भगवान की 9 -10 वी सदी की प्राचीन प्रतिमा और नालंदा विहार 9, 10, 11 से जैन तीर्थंकर प्रतिमा प्राप्त होना यहां प्राचीन काल से जैन धर्म प्रचलन में होने के प्रमाण है।

श्री संजय जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि भारत ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 30 प्रमुख यूनिवर्सिटी में जैन विद्या और भारत की प्राचीनतम प्राकृत भाषा के पाठ्यक्रम संचालित है।

पुरातत्व विभाग द्वारा भी संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से यूनेस्को को नालंदा से जैन तीर्थंकर प्रतिमाएं प्राप्त होने और प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय में जैन शास्त्र पढ़ाए जाने की लिखित जानकारी दी गई है। जवाहर लाल यूनिवर्सिटी द्वारा भी 9 जुलाई 2024 को जैन दर्शन के लिए सेंटर आरंभ करने के प्रस्ताव पारित किया गया है।

श्री संजय जैन ने विश्व जैन संगठन और समस्त जैन समाज की और से केंद्र सरकार, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय, बिहार सरकार और नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन समिति से नालंदा विश्वविद्यालय में अतिशीघ्र जैन दर्शन, जैन विद्या और प्राकृत भाषा पाठ्यक्रम आरंभ करने की मांग की और इस कार्य में संगठन और अनुभवी जैन विद्वानों द्वारा पूर्ण सहयोग किए जाने का आश्वासन दिया और प्राचीन नालंदा, तक्षशिला व विक्रमशिला विश्वविद्यालय से भी पूर्व बिहार में भगवान महावीर के जीवनकाल में आज से 2500 वर्ष पूर्व महिलाओं के लिए जैन दर्शन शिक्षा देने हेतु संचालित गुणशिला विश्वविद्यालय और कुंडलपुर में शारीरिक प्रशिक्षण संस्थान की खोज कर पुनः स्थापना की जाएं।

आकाश जैन
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी
विश्व जैन संगठन (पंजी.)

'गौशाला' बने उत्तरी-बाहरी व पश्चिमी दिल्ली के सड़क मार्गों पर गऊ माता सुरक्षा सहित सड़क सुरक्षा व यात्री सुविधा पुनर्स्थापित करने हेतु गुरू हनुमान सोसाइटी ऑफ भारत ने किया निवेदन

परिहवन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के कृष्णा कुंज, बी-6/36, सैक्टर-15, रोहिणी स्थित एनजीओ गुरू हनुमान सोसाइटी ऑफ भारत (पंजी०) ने 'गौशाला' बने उत्तरी-बाहरी व पश्चिमी दिल्ली के सड़क मार्गों पर गऊ माता सुरक्षा सहित सड़क सुरक्षा व यात्री सुविधा पुनर्स्थापित करने हेतु महामहिम उपराज्यपाल महोदय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, पुलिस आयुक्त महोदय, दिल्ली पुलिस, प्रमुख अभियंता महोदय, लोक निर्माण विभाग, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, आयुक्त महोदय, दिल्ली नगर निगम से निवेदन किया है।

उन्होंने इस निवेदन में कहा कि महोदय, इस निवेदन के माध्यम से हम आपका ध्यान उत्तरी-बाहरी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों मेंम दस - पन्द्रह - बीस बीस गऊ माताओं के मुख्य बैठने, खाने-पीने व सड़क एवं सैण्ट्रल वर्ज पर रहने के कारण जनता व गऊ माताओं को हो रही गंभीर असुविधाओं व सड़क दुर्घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

ये गऊ माता झुण्ड बनाकर मुख्य मार्गों पर विचरण कर रही हैं।

वहीं सड़क के बीचोंबीच व डिवाइडर के समीप बैठ जाती हैं।

सड़क किनारे फुटपाथ पर जनता इनके लिए खानपान सामग्री छोड़ देते हैं।

अनेक बार गऊ माताएं झुण्ड बनाकर सड़क मार्ग पर यातायात प्रवाह ही बाधित कर देती हैं। वाहनों को इनके बीच से होकर दाएं-बाएं दाएं-बाएं मुड़कर आगे बढ़ना पड़ता है।

ऐसे में विशेषकर सायंकाल व रात्रिकाल में सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं। इन सड़क दुर्घटनाओं में न केवल गऊ माताएं अपितु जनता भी चोटिल हो रही है।

पिछले लगभग एक-दो वर्ष समय से यह समस्या गंभीर रूप लेती जा रही है।

पहले जहाँ एक-दो गऊ माता सड़क पर कभी-कभार ही मिलती थीं, अब इनके झुण्ड के झुण्ड चौबीसों घंटे सड़क मार्ग व सैण्ट्रल वर्ज पर पाए जा रहे हैं।

निम्नलिखित सड़क मार्गों पर यह समस्या किसी भी समय देखी जा सकती है:

(01) रिंग रोड़ स्थित ब्रिटानिया फ्लाईओवर से वजीरपुर फ्लाईओवर की ओर बढ़ते समय श्मशान भूमि के समीप फुट ओवर ब्रिज के आसपास सड़क मार्ग।

(02) बाहरी रिंग रोड़ स्थित प्रशांत विहार एलिवेटिड कॉरिडोर के नीचे सड़क मार्ग व सैण्ट्रल वर्ज पर। यहाँ सैण्ट्रल वर्ज पर तो गऊशाला सी बन गई प्रतीत हो रही है। 40-50 गऊ माताएं व बछड़े।

(03) रोहिणी सैक्टर-15 व 16 विभाजक मार्ग पर राधे-राधे हलवाई से बंसल भवन के बीच सड़क मार्ग पर। 20-30 की संख्या में गऊ माताएं।

(04) रोहिणी सैक्टर-15, बी-4 रोड़ स्थित नाला सेतु के आसपास 20-30 गऊ माताएं। हँस विहार अपार्टमेंट की दीवार के विपरीत।

(05) अन्य अनेक सड़क मार्ग।

ये गऊ माताएं किसी न किसी डेयरी की हैं जोकि प्रातः सायं इनका दुग्ध दोहन कर इन्हें सड़कों पर छोड़ देते हैं। प्रत्येक गऊ माता की त्वचा पर किसी न किसी प्रकार का पहचान चिन्ह अंकित है।

समस्या को दर्शाती कुछ फोटो संलग्न कर रहे हैं कृपया।

अग्रिम प्रतिलिपि (सूचनार्थ एव आवश्यक कार्रवाई हेतु):

उपायुक्त महोदय, रोहिणी क्षेत्र, दिल्ली नगर निगम

उपायुक्त महोदय, केशव पुरम क्षेत्र, दिल्ली नगर निगम

उपायुक्त महोदय, यातायात, उत्तरी परिक्षेत्र, दिल्ली पुलिस

विनम्र निवेदन है कि संबंधित विभागों व अधिकारियों को इस विषय पर त्वरित संज्ञान लेकर अविलंब आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने की सलाह जारी करें महोदय।

मैकावर बीके प्राइवेट लिमिटेड ने सफदरजंग अस्पताल को महत्वपूर्ण चिकित्सा उपकरण दिए

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नईदिल्ली। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने के लिए, रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली साउथ ईस्ट ने मैकावर बीके प्राइवेट लिमिटेड के साथ साझेदारी में, सफदरजंग अस्पताल को महत्वपूर्ण चिकित्सा उपकरण दिए हैं। तीन यूरेटेरोरोस्कोप और 9 इन्फ्यूजन पंपों से युक्त इस योगदान से अस्पताल की गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं देने की क्षमता बढ़ेगी।

इस अवसर पर एक हैंडओवर समारोह आयोजित किया गया, जिसमें भाग लेने वाले सभी संगठनों के प्रमुख व्यक्ति शामिल हुए। वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना तलवार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अतिरिक्त एमएस, सीएसआर समिति टीम के सदस्य, एचओडी, संकाय और अस्पताल के कर्मचारी भी मौजूद थे।

रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली साउथ ईस्ट के अध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे का समर्थन करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ₹हमारा क्लब हमारे समुदाय में ठोस बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह योगदान सभी के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम है।₹ मैकावर बीके प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री अजय गुप्ता ने सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति अपनी कंपनी के समर्पण को दोहराया। गुप्ता ने कहा, ₹हम सार्थक प्रभाव पैदा करने के लिए साझेदारी की शक्ति में विश्वास करते हैं। रोटरी क्लब के साथ यह सहयोग हमें सार्वजनिक स्वास्थ्य में प्रभावी रूप से योगदान करने की अनुमति देता है।₹ डॉ. वंदना तलवार ने इस पहल के लिए गहरा आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ₹ये अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरण हमारी निदान और उपचार क्षमताओं में महत्वपूर्ण रूप से सुधार करेंगे। हम रोटरी क्लब और मैकावर बीके प्राइवेट लिमिटेड के सार्वजनिक स्वास्थ्य में उनके उदार योगदान के लिए आभारी हैं।₹ इन उपकरणों से रोगी देखभाल को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। मूत्र पथ के मुद्दों के निदान और उपचार के लिए यूरेटेरोरनोस्कोप महत्वपूर्ण हैं, जबकि इन्फ्यूजन पंप विभिन्न चिकित्सा प्रक्रियाओं में आवश्यक उपकरण हैं। यह योगदान रोटरी क्लब के चल रहे कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा संस्थानों का समर्थन करना और व्यापक समुदाय के लिए चिकित्सा सुविधाओं में सुधार करना है। यह पहल भारत में स्वास्थ्य सेवा की जरूरतों को पूरा करने के लिए सेवा संगठनों, निजी कंपनियों और सार्वजनिक संस्थानों के बीच सहयोग की बढ़ती प्रवृत्ति को रेखांकित करती है।

चूंकि सफदरजंग अस्पताल आबादी के एक बड़े हिस्से की सेवा करना जारी रखता है, इसलिए यह उपकरण योगदान राष्ट्रीय राजधानी में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

"आप" कार्यकर्ताओं ने पीड़ति परिवार को न्याय देने की मांग को लेकर एलजी निवास पर जमकर की नारेबाजी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। मयूर विहार फेस तीन में एलजी के अधीन डीडीए के नाले में गिरकर हुई मां-बेटे की मौत से आक्रोशित आम आदमी पार्टी ने शनिवार को एलजी सचिवालय पर जबरदस्त विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने दोषी अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने और एलजी से इस्तीफे की मांग की। ''आप'' प्रदेश उपाध्यक्ष एवं स्थानीय विधायक कुलदीप कुमार के नेतृत्व में हुए विरोध-प्रदर्शन में कई विधायक, महिला, यूथ विंग व लीगल सेल के पदाधिकारी समेत बड़ी तादात में कार्यकर्ता शामिल हुए। 'एलजी साहब इस्तीफा दो, डीडीए के अफसरों को सस्पेंड करो समेत अन्य नारे लिखे तख्तियों के साथ आए कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी कर एलजी से पीड़ति परिवार को न्याय दिलाने की मांग की। ''आप'' का कहना है कि एलजी के अधीन डीडीए की लापरवाही से मां-बेटे की मौत हुई है। एलजी साहब केंद्र की भाजपा सरकार की कठपुतली बनकर काम कर रहे हैं। इसलिए अभी तक दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई है और न तो पीड़ति परिवार के लिए आर्थिक मदद की घोषणा ही हुई है।

पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत शनिवार को दोपहर करीब 12 बजे बड़ी तादात में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता एलजी सचिवालय पहुंचे। पुलिस ने उन्हें रोका तो प्रदर्शन में शामिल पार्टी के नेता, विधायक, पार्षद व कार्यकर्ता सड़क पर ही बैठकर एलजी और भाजपा के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। डीडीए की लापरवाही से हुई मां-बेटे की दुखद मौत से नाराज ''आप'' कार्यकर्ताओं और महिला विंग ने दिल्ली के नाले साफ करो, एलजी तेरी तानाशाही नहीं चलेगी समेत अन्य नारे लगाते हुए एलजी को तत्काल इस्तीफा देने और दोषी अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। इस प्रचंड विरोध प्रदर्शन में ''आप'' के विधायक हाजी यूनुस, अब्दुल रहमान, राजेंद्र पाल गौतम और अखिलेश पति त्रिपाठी समेत अन्य विधायक शामिल हुए। इनके अलावा पार्टी की वरिष्ठ नेता रीना गुप्ता, महिला विंग की प्रदेश अध्यक्ष सारिका चौधरी, यूथ विंग के अध्यक्ष पंकज गुप्ता, लीगल सेल के अध्यक्ष संजीव नासियार समेत अन्य विंग के अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

इस दौरान "आप" प्रदेश उपाध्यक्ष एवं स्थानीय विधायक कुलदीप कुमार ने कहा कि हम एलजी साहब के अधीन डीडीए के अधिकारियों की लापरवाही की वजह से मयूर विहार फेज 3 में मां-बेटे की मौत हुई है। एलजी साहब उन्हें इंसाफ दें और इस मामले से बचने की न तो कोशिश करें और न ही झूठ बोलें। भाजपा के लोग हर जगह प्रदर्शन करते हैं, लेकिन इस बार वो भाग गए, क्योंकि उन्हें पता था कि ये डीडीए का नाला है। डीडीए सीधे-सीधे एलजी के अधीन आता है। लेकिन एलजी साहब अब इससे नहीं बच सकते। उन्हें कार्रवाई करते हुए अधिकारियों पर हत्या का मुकदमा दर्ज करवाना पड़ेगा। उस मां-बेटे की क्या गलती थी? अगर वो नाले के पास से गुजर रहे थे और नाला नहीं ढका था, तो ये अधिकारियों की लापरवाही थी। एलजी साहब उन्हें क्यों बचा रहे हैं?

वहीं, "आप" नेता रीना गुप्ता ने कहा कि एलजी दिल्ली की चुनी हुई केजरीवाल सरकार को काम नहीं करने दे रहे हैं। वो अफसरों को कंट्रोल करके दिल्ली के सारे काम रुकवा रहे हैं। आज हम उनसे उनके इस्तीफे की मांग करने आए हैं। अगर एलजी वी के सक्सेना को मुख्यमंत्री बनने का शौक है तो वो अपना इस्तीफा देकर मैदान में आए और मुख्यमंत्री बनने के लिए चुनाव लड़ें। वो जानबूझकर दिल्ली सरकार के काम रोक रहे हैं। डीडीए सीधे-सीधे एलजी साहब के अधीन है। उसके खुले नाले में गिरने से एक मां-बच्चे की मौत हो गई। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिस डीडीए की जिम्मेदारी एलजी साहब की है, वो उसका काम देखने के बजाय सरकार के सारे विभागों में दखलअंदाजी करते हैं या किसी मंत्री को चिट्ठी लिख देते हैं। अगर उनसे डीडीए नहीं संभल पा रहा है, तो वो अपने पद से इस्तीफा दें।

गौतमबुद्ध नगर के चार परिषदीय स्कूलों पर लटक सकता है ताला, छात्र से अधिक है शिक्षकों की संख्या

परिवहन विशेष न्यूज

गौतमबुद्ध नगर में परिषदीय स्कूलों को संवारा जा रहा है। भले ही स्कूलों का कायाकल्प हो रहा हो लेकिन यहां पर लगातार छात्रों की संख्या कम होती जा रही है। हाल ही में शासन की ओर से जनपद के 152 स्कूलों की सूची जारी की गई थी जिनमें 50 से कम छात्रों का नामांकन था। उनमें दनकौर जेवर और दादरी के ही 132 स्कूल शामिल थे।

ग्रेटर नोएडा। प्रदेश के शो विंडो कहे जाने वाले गौतमबुद्ध नगर के चार परिषदीय स्कूलों में छात्र संख्या कम होने के कारण ताला लटक सकता है। यदि ऐसा होता है तो इनमें पढ़ने वाले बच्चों को नजदीक के स्कूल में स्थानांतरित किया जाएगा। इससे उन्हें दिक्कत होगी। शिक्षक अन्य स्कूल में समायोजित होंगे।

बेसिक शिक्षा परिषद की ओर से परिषदीय स्कूलों को संवारा जा रहा है। भले ही स्कूलों का कायाकल्प हो रहा हो, लेकिन स्कूलों से लगातार छात्रों की संख्या कम होती जा रही है। हाल ही में शासन की ओर से जनपद के 152 स्कूलों की सूची जारी की गई थी, जिनमें 50 से कम छात्रों का नामांकन था। उनमें दनकौर, जेवर और दादरी के ही 132 स्कूल शामिल थे। दादरी ब्लॉक के प्राथमिक स्कूल रोशनगढ़ी और प्राथमिक स्कूल नई बील में कई कक्षाओं में एक भी छात्र का नामांकन नहीं है।

दोनों स्कूलों में दो-दो छात्रों का ही नामांकन है। दनकौर ब्लॉक के प्राथमिक स्कूल बूढ़ा घरबरा और प्राथमिक स्कूल मिल्क खरेली भाव में भी छात्रों की संख्या 10 से कम है। चारों स्कूलों में शिक्षकों की संख्या तीन-तीन से अधिक है। नई शिक्षा नीति के तहत एक शिक्षक 30 छात्रों को पढ़ाएगा, लेकिन यहां छात्रों से अधिक शिक्षक तैनात हैं।

नामांकन बढ़ाने की नहीं बनी योजना

पिछले कई महीनों से स्कूलों में छात्रों की संख्या कम हो रही है। उसके बाद भी शिक्षा विभाग की ओर से होने कोई रणनीति नहीं बनाई गई। पिछले सत्र में शिक्षकों ने घर-घर जाकर अभिभावकों को परिषदीय स्कूलों में मिल रही सुविधाओं के बारे में अवगत कराया था,लेकिन इस बार ऐसा देखने को नहीं मिला। आउट आफ स्कूल छात्रों की गांव- गांव जाकर पहचान करनी थी। उस अभियान को भी गति नहीं मिल पाई।

आबादी नहीं होने का शिक्षक बता रहे कारण

छात्रों की संख्या कम होने का कारण शिक्षक आबादी नहीं होना बता रहे है। शिक्षकों का कहना है कि मजरा में दो तीन परिवार ही रहते हैं। जो संपन्न परिवार हैं। वह अपने बच्चों को परिषदीय स्कूलों में नहीं भेजना चाहते हैं। वहीं नई बील स्कूल ईस्टन परिफेरल के पास में है। जहां आए दिन हादसे होते हैं। हादसों के डर के कारण अभिभावक बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते हैं।

आज से शुरू होगा हॉस्पिटैलिटी एक्सपो, 20 हजार से अधिक खरीददारों के पहुंचने का अनुमान

इंटरनेशनल हॉस्पिटैलिटी एक्सपो नोएडा में आज से इंडिया इंटरनेशनल हॉस्पिटैलिटी एक्सपो (IHE 2024) का सातवां संस्करण शुरू हो रहा है। जो 3 अगस्त से 6 अगस्त 2024 तक भारत एक्सपो सेंटर एंड मार्ट (ग्रेटर नोएडा) में आयोजित होगा। माना जा रहा है कि इसमें 20 हजार से अधिक खरीददारों के आने की संभावना है। इसमें वियतनाम से राजनयिक हॉस्पिटैलिटी पेशेवर शेफ भी हिस्सा लेंगे।

गुरुग्राम। ग्रेटर नोएडा। इंडिया इंटरनेशनल हॉस्पिटैलिटी एक्सपो के सातवें संस्करण का आयोजन तीन से छह अगस्त तक इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में होगा। इसमें एक हजार से अधिक प्रदर्शक और 20 हजार से अधिक खरीदारों के पहुंचने का अनुमान है।

एक्सपो में नई प्रौद्योगिकी की दी जाएगी जानकारी

जो लक्जरी होटल, रिसार्ट्स, होमस्टे, रेस्तरां, क्लाउड किचन से जुड़े हैं। इंडिया इंटरनेशनल हॉस्पिटैलिटी एक्सपो के अतिरिक्त कैटरिंग एशिया, टेंट डेकोर एशिया और आयुर्योग एक्सपो का भी आयोजन होगा। इस एक्सपो में नवीनतम रुझानों के साथ नई प्रौद्योगिकी, सेवाओं के बारे में जानकारी दी जाएगी।

वियतनाम से राजनयिक, हॉस्पिटैलिटी पेशेवर भी होंगे शामिल

इंडिया इंटरनेशनल एक्सपो के लिए वियतनाम को साझेदार देश के रूप में आमंत्रित किया है। वियतनाम से राजनयिक, हॉस्पिटैलिटी पेशेवर, शेफ एक्सपो में शामिल होंगे। इसका मकसद भारत और वियतनाम के बीच हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र के साथ व्यावसायिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना है।

इंडिया एक्सपो मार्ट के चेयरमैन डा. राकेश कुमार ने कहा है कि इंडिया इंटरनेशनल हॉस्पिटैलिटी एक्सपो नई साझेदारियां बनाने और विकास एवं सहयोग बढ़ाने का मौका है, ताकि हॉस्पिटैलिटी उद्योग वैश्विक मंच पर फलताफूलता रहे।

कांवड़ियों के एक गुट ने दूसरे गुट पर किया हमला, गाड़ियां तोड़ी; इलाके में तनाव का माहौल

पुलिस के अनुसार सेक्टर-12 प्रेम नगर के दो गुट 27 जुलाई को कांवड़ लेकर हरिद्वार के लिए गए थे। इसमें एक झुग्गी का गुट है और एक सेक्टर 12 में रहने वाले लोगों का। सेक्टर 12 निवासी दीपक ने बताया कि 27 जुलाई को दोनों गुट कांवड़ लाने के लिए हरिद्वार जाने लगे तो झुग्गी वाले गुट ने उनके गुट से तेज संगीत का कांप्टीशन करने की बात कही।

गुरुग्राम। सेक्टर-14 थाना क्षेत्र के सेक्टर 12 प्रेम नगर स्थित मंदिर में जलाभिषेक के बाद कांवड़ियों के एक गुट ने दूसरे गुट पर हमला कर दिया। यह हमला लाठी डंडों, रॉड और तलवारों से किया गया। हमले में दूसरे गुट के आधा दर्जन लोग घायल हो गए। तोड़फोड़ और पथराव में आधा दर्जन गाड़ियां भी क्षतिग्रस्त हो गईं। टकराव की सूचना के बाद भारी संख्या में यहां पर पुलिस बल को तैनात कर दिया गया। फिलहाल स्थिति शांतिपूर्ण है।

पुलिस के अनुसार सेक्टर-12 प्रेम नगर के दो गुट 27 जुलाई को कांवड़ लेकर हरिद्वार के लिए गए थे। इसमें एक झुग्गी का गुट है और एक सेक्टर 12 में रहने वाले लोगों का। सेक्टर 12 निवासी दीपक ने बताया कि 27 जुलाई को दोनों गुट कांवड़ लाने के लिए हरिद्वार जाने लगे तो झुग्गी वाले गुट ने उनके गुट से तेज संगीत का कांप्टीशन करने की बात कही। जब दीपक के गुट ने इसके लिए मना किया तो उन्होंने झगड़ा किया। उस समय विवाद सुलझ गया। आरोप है कि झुग्गी वाले गुट के लोगों ने धमकी दी थी कि कांवड़ लाने के बाद वह उन्हें सबक सिखाएंगे।

सेक्टर 12 के मकान में घुसकर की मारपीट

शुक्रवार सुबह दोनों गुट वापस आए और प्रेम नगर चौक स्थित मंदिर में जलाभिषेक किया। सेक्टर 12 निवासी गुट के लोग अपने-अपने घरों में थे। इसी दौरान झुग्गियों में रहने वाले कांवड़ियों के गुट के 15 से ज्यादा लोग हाथ में लाठी-डंडे और तलवार लेकर सेक्टर 12 में बने एक मकान में घुस गए और दूसरे गुट के लोगों से मारपीट की। उनकी गाड़ियों में तोड़फोड़ की गई। लोगों से मारपीट, गाड़ियों में तोड़फोड़ की घटना सीसीटीवी कैमरे में भी रिकार्ड हो गई। इसके बाद आरोपितों ने बाहर खड़ी स्कार्पियो और टाटा 407 गाड़ी को भी पत्थरों व लाठी-डंडों से क्षतिग्रस्त कर दिया।

महिलाओं ने किया प्रदर्शन, रोड जाम करने की कोशिश

टकराव की सूचना के बाद सेक्टर 14 समेत कई थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को नागरिक अस्पताल भेजा गया। वहीं पीड़ितों से पूछताछ के बाद जब आरोपितों को गिरफ्तार करने की कोशिश की गई तो झुग्गी की महिलाओं ने प्रदर्शन शुरू कर दिया। यहां की महिलाएं सेक्टर 12 चौक पर आ गईं और जाम लगाने की कोशिश की। पुलिस बल ज्यादा होने से महिलाओं को वहां से हटा दिया गया।

नोएडा मेट्रो में अब मुसाफिरों का सफर होगा आसान, एक्वा लाइन पर लगेगा एडवांस पैसेंजर इंफॉर्मेशन डिस्प्ले सिस्टम

नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन के एमडी डॉ. लोकेश एम ने बताया कि एक्वा लाइन के सभी स्टेशनों की अलग-अलग लोकेशन पर इनको लगाया जाएगा ताकि मुसाफिर आसानी से इनको देख सके और मेट्रो की जानकारी प्राप्त कर सके। इसके लिए 21 मेट्रो स्टेशन के कॉनकोर्स में कुल 42 पीआईडीएस इंस्टॉल किए जाएंगे। इसके अलावा आने जाने दोनों प्लेटफार्म पर 2-2 सिस्टम लगाए जाएंगे।

नोएडा। नोएडा मेट्रो रेल कारपोरेशन मुसाफिरों का सफर आसान बनाने के लिए अब एक्वा लाइन पर एडवांस पैसेंजर इंफॉर्मेशन डिस्प्ले सिस्टम (पीआईडीएस) लगाएगा। यह सिस्टम लाइन के सभी 21 मेट्रो स्टेशन पर संचालित किया जाएगा।

इसके लिए एनएमआरसी प्रबंधन ने रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल (पीआईडीएस) जारी किया है। लो कॉस्ट कंपनी का चयन किया जाएगा। परियोजना में 11.27 करोड़ रुपये खर्च कर कुल 88 पीआईडीएस सिस्टम स्टेशनों पर इंस्टाल होंगे। कार्य में 10 माह का समय लगेगा।

कॉनकोर्स में कुल 42 पीआईडीएस इंस्टॉल

नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन एमडी डॉ. लोकेश एम ने बताया कि सभी स्टेशनों की अलग-अलग लोकेशन पर इनको लगाया जाएगा, ताकि मुसाफिर आसानी से इनको देख सके और मेट्रो की जानकारी प्राप्त कर सके। इसके लिए 21 मेट्रो स्टेशन के कॉनकोर्स में कुल 42 पीआईडीएस इंस्टॉल किए जाएंगे। इसके अलावा आने जाने दोनों प्लेटफार्म पर 2-2 सिस्टम लगाए जाएंगे। जिस कंपनी को काम सौंपा जाएगा, जो सप्लाई, इंस्टॉलेशन, टेस्टिंग व कमीशनिंग का काम करेगी।

टेंडर शर्त अनुसार उसे 24 माह तक सभी डिवाइस का रखरखाव का काम भी करना होगा। सभी पीआईडीएस डिस्प्ले बोर्ड टू कलर एलईडी बेस्ड होंगे। इसके अलावा इनको कंट्रोल करने के लिए एक कामन वर्क स्टेशन भी विकसित किया जाएगा। आधुनिक पीआइडीएस सिस्टम के इंस्टालेशन से इस रूट पर प्रतिदिन यात्रा करने वाले यात्रियों तक जानकारियां पहुंचने में एनएमआरसी को मदद मिलेगी।

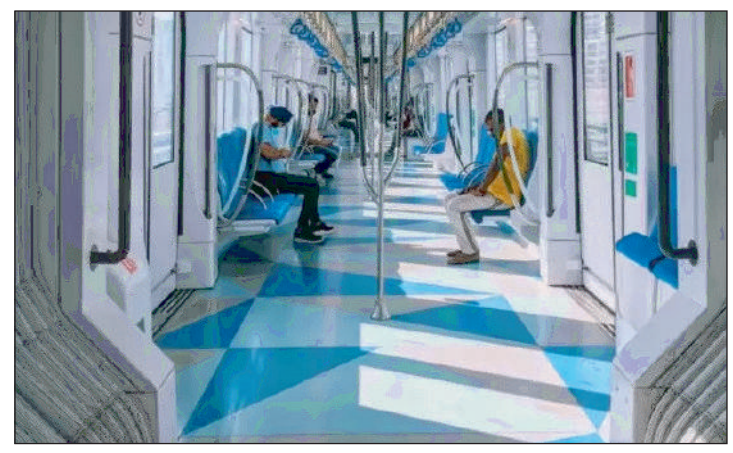

इन स्टेशनों पर लगेंगे पीआईडीएस सिस्टम

एक्वा लाइन के 21 मेट्रो स्टेशन शामिल हैं। यह स्टेशन नोएडा सेक्टर-51 से शुरू होकर ग्रेटर नोएडा में डिपो स्टेशन तक है। सेक्टर 51 मेट्रो स्टेशन के अप व डाउन प्लेटफार्म पर 2-2 यानि कुल 4 पीआइडीएस इंस्टाल होंगे। सेक्टर-50, सेक्टर-76, सेक्टर-81, सेक्टर-101, एनएसईजेड, सेक्टर-83, सेक्टर-137, सेक्टर-142, सेक्टर-143, सेक्टर-144, सेक्टर-145, सेक्टर-146, सेक्टर-147, सेक्टर-148, केपी-2, परी चौक, अल्फा-1, डेल्टा-1 तथा ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण स्टेशन के अप व डाउन प्लेटफार्म पर 2-2 यानि कुल 4 पीआइडीएस इंस्टाल होंगे। डिपो स्टेशन पर अप व डाउन प्लेटफार्म पर 2-2 पीआइडीएस के अतिरिक्त तीसरे प्लेटफार्म पर भी 2 पीआइडीएस इंस्टाल होंगे।

यह होगा फायदा

- सिस्टम की मदद से प्लेटफार्म आने वाली मेट्रो की जानकारी मिलेगी।
- कितने समय में प्लेटफार्म पर और किस अंतराल पर आएगी मेट्रो जानकारी मिलेगी
- समय से लेकर मौसम की जानकारी अपडेट करेगा।
- किसी प्रकार की अनहोनी होने पर इसे सीधे कंट्रोल रूम से जोड़ा जा सकेगा।
- अनाउंसमेंट संबंधित जानकारी भी इस पर फ्लैश की जा सकेगी।

सत्ता हो विपक्ष, राजनीति तो स्वाभाविक है

जहां तक बजट में राजनीति का सवाल है तो शायद ही कोई सरकार या दल होगा, जिसने अपने कार्यकाल में प्रस्तुत बजट में राजनीति ना की होगी।

विपक्षी कांग्रेस का आरोप है कि मोदी सरकार ने बजट को लेकर राजनीति की है। विपक्ष का आरोप है कि इस बजट में नीतीश कुमार और एन चंद्रबाबू नायडू ने अल्पमत सरकार को समर्थन देने की कीमत वसूली है। आरोप यह भी है कि सरकार बचाने के लिए बीजेपी ने बिहार और आंध्र प्रदेश को विशेष पैकेज दिया है, जबकि अन्य राज्यों को कुछ खास हासिल नहीं हुआ है। आरोप को बढ़ाते हुए विपक्ष यहां तक कह रहा है कि यह पूरे देश का बजट नहीं है। कांग्रेस तो यहां तक कह रही है कि मौजूदा बजट उसके चुनाव घोषणा पत्र की कॉपी है।

जहां तक बजट में राजनीति का सवाल है तो शायद ही कोई सरकार या दल होगा, जिसने अपने कार्यकाल में प्रस्तुत बजट में राजनीति ना की होगी। हर राजनीतिक दल की अपनी विचारधारा है, उसका अपना एजेंडा होता है, उसका अपना वोट बैंक होता है। बजट हो या अन्य सरकारी फैसले, हर राजनीतिक दल और सरकार अपने कदम उठाते वक्त उनका ध्यान रखती है। इसके साथ ही हर राजनीतिक दल अपने भावी और लक्षित वोट बैंक को लुभाने के लिहाज से भी फैसले लेता है। हर राजनीतिक दल की चाहत होती है कि उसका मौजूदा वोट आधार बढ़े। इस लिहाज से भी वह अपने राजनीतिक फैसले लेता है और उसकी सरकारें भी अपनी नीतियां इसी हिसाब से बनाती और बढ़ाती हैं। इस नजरिए से देखें तो अगर मोदी सरकार ने नीतीश और नायडू के राज्यों को कुछ विशेष सहूलियतें दी है तो कोई गलत नहीं है। अगर बिहार बाकी राज्यों की तुलना में पिछड़ा है, वह जनसंख्या पलायन का दंश झेलने को मजबूर है तो हर सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि उस देश के साथ कदमताल करने के लिए बिहार को अगर सहूलियत देनी पड़ी तो दे। मदद का हाथ बढ़ाना पड़े तो बढ़ाए। अगर आंध्र प्रदेश को भी मदद की दरकार हो तो मिलनी चाहिए। सिर्फ बिहार और आंध्र ही नहीं, जो राज्य पिछड़ा है, उसे आगे लाने और उसे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मदद की स्पष्ट नीति होनी चाहिए। अव्वल तो हम देश को एक इकाई के तौर पर देखने का दावा करते हैं। अपना संविधान नागरिक को देश की मूल इकाई घोषित करता है। इस लिहाज से हर नागरिक बराबर है। लेकिन आर्थिक और सामाजिक नजरिए से देखें तो हर नागरिक बराबरी की बेंच पर नहीं बैठा है। समान मतदान और कानून के सामने बराबरी के अधिकार ने एक हद तक बराबरी की इस अवधारणा को जिंदा जरूर रखा है। यह बात और है कि अक्सर अमीर और गरीब के लिए कानूनी पेच और प्रक्रियाएं, यहां तक कि न्यायिक अवधारणा भी बदल जाती है। इन बातों को छोड़ दें तो कम से कम आर्थिक आधार पर बराबरी की ओर बढ़ने की कोशिश होनी चाहिए। प्रशासनिक सहूलियत और सांस्कृतिक आधार पर हमने राज्य गठित कर लिए तो इसका यह मतलब नहीं कि उनकी असमानताओं को अनदेखी की जाए। किसे नहीं पता है कि बिहार के उत्तरी हिस्से में हर साल कोसी नदी प्रलय लेकर आती है। जिससे तकरीबन आधार बिहार नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर रहता है। इसी तरह समूचे देश को पता है कि तेलंगाना के अलग होने के बाद हैदराबाद आंध्र की राजधानी नहीं रहा। उसे राजधानी बनाने के लिए संसाधन चाहिए ही होंगे। इसलिए अगर बिहार और आंध्र को सहूलियतें कुछ ज्यादा मिली भी हैं तो उसे राजनीतिक चश्मे से देखने की बजाय जमीनी हकीकत के लिहाज से समझा जाना चाहिए।

वैसे यह भी अर्ध सत्य ही है कि बाकी राज्यों को बजट में कुछ नहीं मिला। जबकि इस बजट में अगर रेल परियोजनाएं हैं, अगर कृषि बजट को सवा लाख करोड़ से बढ़ाकर एक करोड़ 52 लाख करोड़ कर दिया गया है, अगर सड़क परियोजनाओं की बाढ़ लाई गई है, अगर केंद्रीय करो में राज्यों का हिस्सा बढ़ाया गया है तो इससे किसी एक ही राज्य का भला नहीं होना है, बल्कि देश के हर राज्य को भला होना है। बजट में आदिवासी लोगों के लिए बजट में वित्त मंत्री पूर्वोदय योजना लेकर आई हैं। जिसके जरिए झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया जाएगा। झारखंड को एक और योजना का सीधा फायदा मिलेगा। बजट प्रस्तावों में 'प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान' योजना भी लायी गई है। आदिवासी गांवों और लोगों के विशेष विकास के लिए विशेष रूप से डिजाइन इस योजना का फायदा उन सभी राज्यों को मिलना है, जहां आदिवासी आबादी है। झारखंड में जहां 27 फीसद आबादी जनजातीय है। वहीं उसके पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ में करीब 32 फीसद आबादी जनजातीय समुदाय की है। 'प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान' के दायरे में 63 हजार गांवों को लाया जाना है। जिससे सीधे तौर पर पांच करोड़ जनजातीय लोगों की जिंदगी बदलने की कोशिश की जानी है। जाहिर है कि इसका फायदा उड़ीसा, झारखंड और छत्तीसगढ़ के साथ कांग्रेस शासित तेलंगाना को भी मिलेगा, क्योंकि इन्हीं राज्यों में देश का सबसे ज्यादा जनजातीय आबादी रहती है।

कांग्रेस ने युवाओं को लुभाने के लिए तीस लाख खाली पड़े सरकारी पदों को भरने और डिप्लोमा धारक सभी बेरोजगार युवाओं को इंटर्नशिप और एक लाख रूपए सालाना देने का वादा किया था। राहुल गांधी और उनके सहयोगियों ने इस वायदे को खूब प्रचारित किया। राहुल गांधी कहा करते थे कि इस सरकार बनी और उधर खटाखट-खटाखट खाते में पैसे ट्रांसफर होने लगे थे। माना जाता है कि इससे युवाओं का एक वर्ग विपक्ष की ओर आकर्षित भी हुआ। कांग्रेस की सीटें बढ़ने में इस वायदे की भी बड़ी भूमिका मानी जा रही है। बजट में सरकार ऐसी योजना तो लेकर नहीं आई, अलबत्ता वह युवाओं के लिए इंटर्नशिप योजना लेकर आई है। जिसके तहत हर साल एक करोड़ युवाओं को इंटर्नशिप दी जानी है, जिसके लिए उन्हें पांच हजार रूपए मासिक और एक मुश्त साल में एक बार छह हजार रूपए भी दिए जाने हैं। करीब चार करोड़ दस लाख युवाओं को कुशल बनाने की भी योजना लाई गई है। इन्हीं योजनाओं का हवाला देकर कांग्रेस सरकार पर आरोप लगा रही है कि उसके वायदे को सरकार ने कॉपी कर लिया है। इसके बहाने वह कांग्रेस पर हमलावर भी है।

चाहे सरकार को विपक्ष, सबका दावा है कि उनकी राजनीति का उद्देश्य देश के लोगों का जीवन स्तर सुधारना है। सवाल यह है कि जब सबका यही उद्देश्य है तो कल्याणकारी योजनाएं कोई भी लाए, उसे खुश होना चाहिए। कांग्रेस को तो वाकई में प्रसन्न होना चाहिए कि उसका वायदा इतना ताकतवर रहा कि उसे अपनाने के लिए उसकी कट्टर विरोधी बीजेपी की सरकार को मजबूर होना पड़ा। लेकिन हकीकत में कांग्रेस खुश नहीं है, उसे लगता है कि सरकार ने सत्ता के जरिए उसका मुद्दा लपक लिया है। कांग्रेस को डर है कि अगर इस प्रस्ताव को ईमानदारी से लागू कर दिया गया तो उसकी ओर आकर्षित हो रहे युवाओं के आकर्षण में कमी आ सकती है। जिसकी वजह से उसे सियासी नुकसान हो सकता है या भविष्य में जितने फायदे मिलने की उम्मीदें रहीं हैं, वह पूरा नहीं हो पाएगा।

सत्ता संभालने की बात हो या उसके विरोध की, सबका उद्देश्य जब राजनीति ही है तो फिर सरकारी कदमों में राजनीति ना होने की उम्मीद पालना बेमानी ही कहा जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी अगर राजनीति में हैं तो वह संत की भूमिका निभाने के लिए नहीं हैं और अगर राहुल भी राजनीति में हैं तो वह अध्यात्म की सेवा करने के लिए नहीं हैं। इसलिए बजट हो विरोध, राजनीति होगी। लिहाजा बजट को लेकर आरोप लगाना कि यह राजनीति बजट है, उसका कोई मतलब नहीं। राजनीति तो यह समझती ही है, आम वोटरों को भी यह जल्द से जल्द समझ लेना चाहिए।

- :सौजन्य :-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV Drive the Future

जापानी प्रतिद्वंद्वी निसान और होंडा आगे बढ़ने के लिए ईवी घटकों और एआई अनुसंधान को करेंगे साझा

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता निसान और होंडा ने कहा कि वे इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बैटरी जैसे घटकों को साझा करने और स्वायत्त ड्राइविंग के लिए संयुक्त रूप से सॉफ्टवेयर अनुसंधान करने की योजना बना रहे हैं। तीसरी जापानी निर्माता कंपनी मित्सुबिशी मोटर्स कॉर्पोरेशन भी निसान-होंडा साझेदारी में शामिल हो गई है। उसका मानना है कि विद्युतीकरण पर केन्द्रित ऑटो उद्योग में नाटकीय बदलावों के अनुरूप गति और आकार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। निसान मोटर कंपनी और होंडा मोटर कंपनी के बीच प्रारंभिक समझौते की घोषणा मार्च में की गई थी। 100 दिनों की बातचीत के बाद, कंपनियों के अधिकारियों ने इस बात की तत्परता दिखाई। जापानी वाहन निर्माता हाल के दशकों में गैसोलीन इंजन के युग पर हावी रहे हैं, लेकिन वे अमेरिका की टेस्ला और चीन की बीवाईडी जैसी ग्रीन कारों के क्षेत्र में नए खिलाड़ियों से पीछे रह गए हैं। होंडा के मुख्य कार्यकारी तोशीहिरो मिबे ने कहा, ₹जो कंपनियाँ बदलावों के हिसाब से खुद को ढाल नहीं पातीं, वे टिक नहीं पातीं।₹ ₹अगर हम सब कुछ खुद करने की कोशिश करेंगे, तो हम आगे नहीं बढ़ पाएंगे।₹ उन्होंने कहा कि निसान और होंडा एक ही बैटरी का उपयोग करेंगे और ईवी एक्सल के लिए मोटर और इनवर्टर के लिए एक ही विनिर्देश अपनाएंगे।

माइबे और निसान के समकक्ष माकोतो उचिदा ने एक साथ मिलकर, जिसे बार-बार ₹मित्र बनाना₹ कहा है, पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं को प्राप्त करने के लिए, कंपनियों ने प्रौद्योगिकी में अधिक रणनीतिक निवेश की योजना बनाई है और मात्रा को बढ़ाकर लागत में कटौती करने का लक्ष्य रखा है।

ब्लैकबक ईवी ने एलन 3X - स्लीपर बस का किया अनावरण, 350 प्री-ऑर्डर किए प्राप्त तथा 1,000 बसों का रखा लक्ष्य

परिवहन विशेष न्यूज

ब्लैकबक ईवी इलेक्ट्रिक बस बाजार में अग्रणी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करना जारी रखता है, जो लंबी दूरी की, प्रीमियम बसें प्रदान करने की अपनी मुख्य रणनीति पर दृढ़ता से कायम है। हमारी पहली एलन 3X, एक 13.5-मीटर सीटर बस, वर्तमान में कठोर आंतरिक सड़क परीक्षण से गुजर रही है। ये परीक्षण वाहन को उसकी सीमाओं तक ले जाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह प्रदर्शन और स्थायित्व के उच्चतम मानकों को पूरा करता है। प्रारंभिक परिणाम बहुत उत्साहजनक रहे हैं, और हम व्यापक सत्यापन सुनिश्चित करने के लिए इन परीक्षणों को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हमारे एलन 3X सीटर संस्करण की सफलता के बाद, हम एलन 3X के स्लीपर मॉडल के विकास की घोषणा करते हुए उत्साहित हैं। यह पहल लंबी दूरी की यात्रा के दौरान बेहतर आराम के लिए भारतीय ग्राहकों की महत्वपूर्ण मांग को पूरा करती है। हमारे अभिनव स्लीपर कोच डिज़ाइन में यात्रियों के आराम और सुविधा को प्राथमिकता दी गई है, जो कई प्रमुख तरीकों से पारंपरिक मॉडलों से अलग है।

हमारी स्लीपर बसों में हेडरूम की सुविधा है, जिसमें प्रत्येक बिस्तर की लंबाई 1.8 मीटर है, ताकि यात्रियों को आराम से बैठने के लिए पर्याप्त जगह मिल सके। बस में 36 बिस्तर और लगभग 8 क्यूबिक मीटर का बड़ा सामान रखने की जगह है। एक बार चार्ज करने पर 300 किमी और 400 किमी की रेंज में उपलब्ध, ये विकल्प ऑपरेटरों को उनकी विशिष्ट मार्ग आवश्यकताओं के आधार पर चुनने की अनुमति देते हैं। प्रीमियम गुणवत्ता वाले इंटीरियर में उच्च-स्तरीय सामग्री और फिनिश, एर्गोनोमिक डिज़ाइन तत्व और उन्नत सुविधाएँ शामिल हैं, जो सभी एक शानदार और आरामदायक यात्रा प्रदान करने के लिए तैयार किए गए हैं।

भारत में 13.5 मीटर का मल्टी-एक्सल इलेक्ट्रिक कोच लॉन्च करने वाली पहली कंपनी के रूप में, ब्लैकबक ईवी अपनी गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा मानना है कि मल्टी-एक्सल (3-एक्सल) कॉन्फ़िगरेशन अपने बेहतरीन आराम और चिकनी सवारी के कारण लंबी यात्राओं के लिए आदर्श है। तीन-एक्सल सेटअप वाहन में वजन को अधिक समान रूप से वितरित करके, विशेष रूप से असमान सड़कों या मोड़ के दौरान स्थिरता को बढ़ाता है। इन लाभों पर ध्यान केंद्रित करके, हमारा लक्ष्य लंबी दूरी की यात्रा के लिए असाधारण आराम और विश्वसनीयता प्रदान करना है, जिससे इलेक्ट्रिक कोच सेगमेंट में हमारा नेतृत्व मजबूत होगा।

हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि ब्लैकबक ईवी ने निजी परिवहन ऑपरेटरों से मजबूत प्रतिक्रिया के साथ प्री-ऑर्डर बुकिंग शुरू कर दी है। आज तक हमने भारत में स्थित कई ग्राहकों और एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समझौता ज्ञापन हासिल किए हैं, कुल मिलाकर 350 बसें, जिनमें सीटर और स्लीपर दोनों मॉडल शामिल हैं। हम संभावित ग्राहकों के साथ भी उन्नत चर्चा कर रहे हैं और साल के अंत से पहले और बुकिंग की उम्मीद कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य 1,000 बसों के लिए प्री-ऑर्डर स्वीकार करना है, उत्पादन शुरू करने के चार साल के भीतर इनका उत्पादन और वितरण करने की योजना है। प्री-ऑर्डर ग्राहक जो एमओयू पर हस्ताक्षर करते हैं, हम पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर डिलीवरी को प्राथमिकता देंगे।

हम उम्मीद करते हैं कि हमारी पहली माइक्रो फैक्ट्री 2025 की तीसरी तिमाही तक चालू हो जाएगी, और 2025 के अंत तक पूर्ण पैमाने पर उत्पादन शुरू हो जाएगा। यह उन्नत उत्पादन क्षमता सुनिश्चित करेगी कि हम अपनी डिलीवरी प्रतिबद्धताओं को समय पर पूरा करें और अपनी इलेक्ट्रिक बसों की बढ़ती मांग को पूरा करना जारी रखें।

हमारा ट्रेडमार्क सेवा मॉडल, EBAAS यानी इलेक्ट्रिक बस एज़ ए सर्विस, व्यापक समर्थन के माध्यम से ग्राहक अनुभव को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सेवा हमारे लिए एक प्रमुख फोकस है और इलेक्ट्रिक बस एज़ ए सर्विस वार्षिक रखरखाव अनुबंध यानी एएमसी और वारंटी सहित कई विकल्प प्रदान करता है। EBAAS में इलेक्ट्रिक बस परिवहन में संक्रमण के लिए आवश्यक संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र शामिल है, जिसमें चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकल्प, एएमसी, वारंटी और प्रशिक्षण शामिल हैं, जो सभी एक पैकेज में बंडल किए गए हैं। हमारा उद्देश्य बेड़े के अपटाइम और परिचालन दक्षता को अधिकतम करते हुए इलेक्ट्रिक बसों में जाने से जुड़े जोखिमों को कम करना है।

इसके अतिरिक्त हम EBAAS डिजिटल फ्लीट मैनेजमेंट टूल प्रदान करते हैं, जो वास्तविक समय ट्रैकिंग, निकटतम चार्जिंग स्टेशन स्थान, ड्राइवर प्रबंधन प्रणाली और सेवा शेड्यूलिंग जैसी उन्नत सुविधाएँ प्रदान करता है। यह टूल सुनिश्चित करता है कि हमारे ग्राहकों के पास अपने इलेक्ट्रिक बस संचालन को प्रभावी ढंग से अनुकूलित करने के लिए आवश्यक सभी संसाधन हों।

हमारे निरंतर नवाचारों और मजबूत ग्राहक फोकस के साथ, ब्लैकबक ईवी दुनिया भर में हमारे ग्राहकों के लिए अद्वितीय आराम, विश्वसनीयता और समर्थन प्रदान करते हुए, इलेक्ट्रिक बस उद्योग के परिवर्तन का नेतृत्व करने के लिए तैयार है।

एनआईटी जमशेदपुर के छात्र शुरू करेंगे सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहनों का स्टार्टअप

परिवहन विशेष न्यूज

पेट्रोल, डीजल और बैटरी से चलने वाले ई-वाहनों के बाद अब सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहनों का जमाना आने वाला है। एनआईटी जमशेदपुर के छात्रों ने इसका डिजाइन तैयार कर लिया है, जिसे अब लैब से निकालकर कमर्शियल बनाने की तैयारी की जा रही है। सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहन को तैयार करने के बाद एनआईटी जमशेदपुर के छात्र इसे बाजार में उतारने की तैयारी कर रहे हैं। इसकी पहल छात्र टीम रेवंत ने की है। उनका प्रयास इलेक्ट्रिक वाहनों के दौर में सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहनों को बाजार में उतारना और तकनीक को दूसरे स्तर पर ले जाना है। संस्थान के छात्र स्टार्टअप टूर पर अपनी खुद की कंपनी बनाकर इसे बाजार में उतारने की तैयारी में जुट गए हैं। संस्थान फंड देकर सहयोग करने को भी तैयार है।

सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहन की स्पीड 25 किलोमीटर प्रति घंटा होगी। वाहन की ऊपरी सतह पर सोलर पैनल लगा है, जिससे वाहन हमेशा रिचार्ज रहेगा। इसके लिए बिजली की जरूरत नहीं होगी। बैटरी सौर ऊर्जा से चार्ज होकर चलती रहेगी। छात्रों के अनुसार, वर्तमान में बाजार में उपलब्ध इलेक्ट्रिक वाहनों को बिजली की जरूरत होती है और कहीं न कहीं बिजली का उत्पादन कार्बन उत्सर्जन का कारण बनता है, लेकिन सौर ऊर्जा से चलने वाला यह वाहन पूरी तरह से ग्रीन वाहन होगा।

इस प्रोजेक्ट पर संस्थान के कई छात्र वर्षों से काम कर रहे हैं। इस हाइब्रिड सोलर वाहन को तैयार करने में कई बैच के छात्रों ने अहम योगदान दिया है। अब इस प्रोजेक्ट को रेवांता प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के माध्यम से बाजार में उतारने की तैयारी है। इसे जमशेदपुर स्थित सोलर इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण कंपनी बनाने की योजना है। प्रोजेक्ट के तहत सोलर इलेक्ट्रिक वाहनों को बाजार में उतारकर ज्यादा से ज्यादा बाजार हिस्सेदारी लेने का लक्ष्य है। इसके लिए छात्रों ने पहले साल में कंपनी के मुनाफे का भी अनुमान लगाया है, जिसके अनुसार कंपनी पहले साल में 30 लाख रुपये कमाएगी।

सोलर इलेक्ट्रिक वाहन को बाजार में उतारने के लिए छात्रों ने देश के 106 राष्ट्रीय उद्यानों और 567 वन्य जीव अभ्यारण्यों को लक्ष्य बनाया है। पहले चरण में इन वाहनों को सफारी के लिए बेचने की योजना है। छात्रों का कहना है कि इस प्रोजेक्ट के जरिए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में क्रांतिकारी बदलाव संभव है। शुरुआती चरण में इसे सफारी के लिए बाजार में उतारा जाएगा। इसके बाद इसकी तकनीक को परिष्कृत कर अन्य क्षेत्रों के लिए भी लॉन्च करने की योजना है।

टीम रेवांता के इस हाइब्रिड सोलर वाहन पर एनआईटी के 30 छात्र काम कर रहे हैं।

सैमसंग ने अपनी नवीनतम सॉलिड-स्टेट ईवी बैटरियों का किया प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

सैमसंग ने हाल ही में बैटरी प्रौद्योगिकी विशेष रूप से सॉलिड-स्टेट बैटरी से संबंधित अपनी नवीनतम प्रगति का प्रदर्शन करके उद्योग में हलचल मचा दी है।

दक्षिण कोरिया के सियोल में आयोजित एसएनई बैटरी डे 2024 एक्सपो में कंपनी ने बताया कि उसकी पायलट सॉलिड-स्टेट बैटरी उत्पादन लाइन अब पूरी तरह से चालू हो गई है।

द इलेक्ट्रिक की रिपोर्ट के अनुसार सैमसंग एसडीआई ने कहा, 'हमने 2027 तक बड़े पैमाने पर ऑल-सॉलिड-स्टेट बैटरी का उत्पादन करने के लिए पिछले साल एक पायलट लाइन बनाई थी।' इसके अलावा बैटरी के प्रारंभिक बैच पहले ही परीक्षण के लिए ईवी निर्माताओं को वितरित कर दिए गए हैं।

सैमसंग एसडीआई ने कहा, 'हमने पिछले साल के अंत से लेकर इस साल की शुरुआत तक ग्राहकों को नमूने उपलब्ध कराए और हमें सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।'

उल्लेखनीय बात यह है कि ये बैटरियां 600 मील की रेंज वाले इलेक्ट्रिक वाहनों को शक्ति प्रदान कर सकती हैं, 9 मिनट में चार्ज हो सकती हैं तथा इनका जीवनकाल 20 वर्ष का हो सकता है।

ये सॉलिड-स्टेट बैटरियाँ वर्तमान में अधिकांश इलेक्ट्रिक वाहनों में उपयोग की जाने वाली लिथियम-आयन बैटरियों की तुलना में छोटी, हल्की और सुरक्षित होने की उम्मीद है। इनमें ईवी उद्योग में क्रांति लाने की महत्वपूर्ण क्षमता है।

कंपनी ने बताया, 'सभी सॉलिड-स्टेट बैटरियां तरल घटकों को ठोस घटकों से बदलकर सुरक्षा बढ़ा सकती हैं। जब इन्हें मौजूदा उत्पादों के समान आकार के पैक में इस्तेमाल किया जाता है, तो इनका वजन कम हो जाता है और ये कम जगह घेरती हैं।'

उच्च उत्पादन लागत के कारण इन बैटरियों का प्रारंभिक अनुप्रयोग 'सुपर प्रीमियम' ईवी सेगमेंट तक ही सीमित रहेगा।

यहाँ 'सुपर प्रीमियम' सेगमेंट का मतलब है प्रति चार्ज लगभग 600 मील की ड्राइविंग रेंज। इसके अलावा सैमसंग प्रीमियम सेगमेंट के लिए हाई-निकेल एनसीएस उत्पाद पेश करेगा।

सैमसंग की ऑक्साइड सॉलिड-स्टेट बैटरी प्रौद्योगिकी में 500 Wh/kg का ऊर्जा घनत्व है, जो मुख्यधारा ईवी बैटरियों के 270 Wh/kg घनत्व से लगभग दोगुना है।

यह बढ़ा हुआ घनत्व वर्तमान इलेक्ट्रिक वाहनों की ड्राइविंग रेंज को संभवत दोगुना कर सकता है।

इसके अलावा, सैमसंग का 9 मिनट में चार्ज करने का दावा संभवतः बैटरी को 0% से 100% तक पूरी तरह चार्ज करने के बजाय 10% या 20% से 80% क्षमता तक चार्ज करने के मानक मीट्रिक को संदर्भित करता है।

यह प्रथा उद्योग में आम है क्योंकि बैटरी के स्वास्थ्य और दीर्घायु की रक्षा के लिए चार्जिंग की गति आमतौर पर 80% के बाद काफी धीमी हो जाती है।

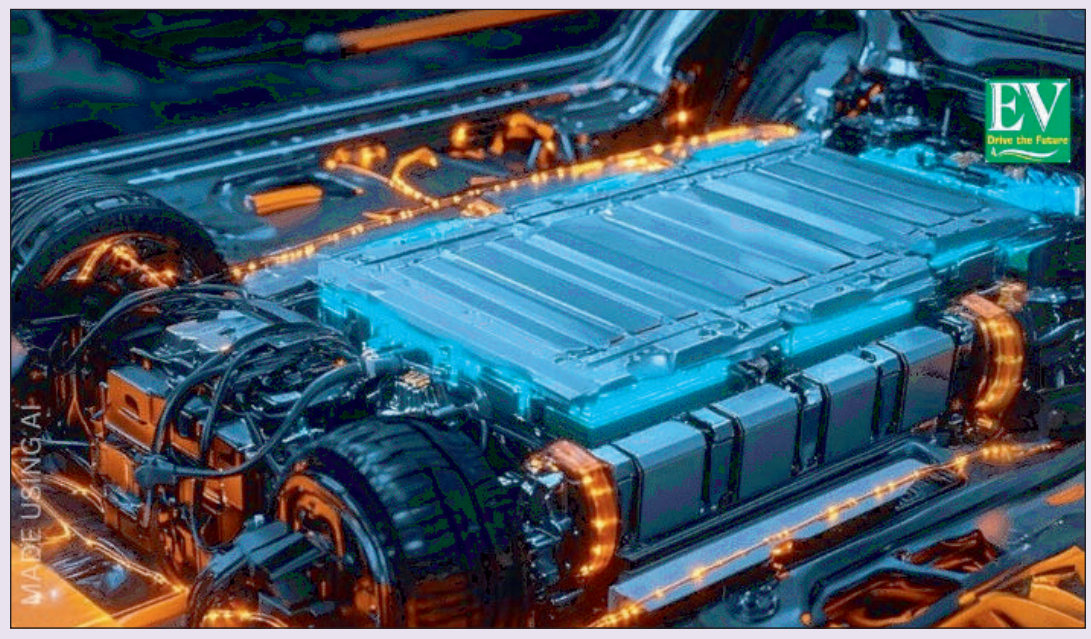

ठोस अवस्था वाली बैटरियों पर अपने काम के अलावा सैमसंग अधिक किफायती लिथियम आयरन फॉस्फेट (एलएफपी) और कोबाल्ट-मुक्त बैटरियों के साथ-साथ लागत कम करने के लिए शुष्क इलेक्ट्रोड उत्पादन विधि का भी विकास कर रहा है।

सैमसंग एसडीआई ने जोर देकर कहा, 'हम न केवल लोकप्रिय और प्रवेश स्तर के खंडों में कीमत का मिलान करेंगे, बल्कि 2026 तक बड़े पैमाने पर ऐसे उत्पादों का उत्पादन भी करेंगे जिन्हें 9 मिनट में तेजी से चार्ज किया जा सकेगा।'

ऐसा कहा जाता है कि चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की सीमित उपलब्धता एक बड़ी बाधा बनी हुई है। जबकि कुछ चीनी बैटरी निर्माता पहले से ही 5C या 6C चार्जिंग स्पीड, 480kW और यहाँ तक कि 600kW चार्जिंग स्टेशनों के बराबर की पेशकश कर रहे हैं, लेकिन उनकी संख्या काफी कम है।

सभी बैटरी निर्माताओं का बैटरी की लंबी उम्र की पेशकश करने का स्पष्ट दृष्टिकोण उल्लेखनीय है। CATL और अन्य बैटरी निर्माताओं ने पहले ही 20 साल की उम्र वाली बैटरी की घोषणा कर दी है, जिन्हें अक्सर 'मिलियन-माइलर₹ बैटरी कहा जाता है। सैमसंग का 'बैटरी की लाइफ़ को 20 साल तक बढ़ाने₹ का विज़न व्यापक बाज़ार के रुझान के अनुरूप है।

सैमसंग की सॉलिड-स्टेट बैटरी की प्रगति महत्वपूर्ण है, लेकिन कंपनी को चीनी निर्माताओं के प्रभुत्व वाले प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में आगे बढ़ना होगा।

सिट्रोऐन बैसेल्ट भारत में हुई पेश, शानदार डिजाइन और लग्जरी इंटीरियर से लैस

परिवहन विशेष न्यूज

कार निर्माता कंपनी Citroen अपनी 5वीं कार Basalt कूपे SUV को आज पेश किया है। इसमें काफी खुछ खास फीचर्स दिए गए हैं। जिसमें डुअल डिजिटल डिस्प्ले 10.25 इंच की टचस्क्रीन सिस्टम वायरलेस स्मार्टफोन चार्जिंग पैड समेत 6 एयरबैग जैसे बेहतरीन फीचर्स शामिल है। वहीं कंपनी अपनी इस गाड़ी को लेकर दावा कर रही है कि यह 18 किमी/लीटर का माइलेज देगी।

नईदिल्ली। Citroen ने अपनी नई Basalt SUV-कूप के भारतीय मार्केट में पेश किया है। कंपनी ने Citroen Basalt के कुछ टीजर पहले ही जारी किए थे और इसके एक्सटीरियर का खुलासा भी पहले हो चुका है, लेकिन अब इस SUV-कूप के प्रोडक्शन-रेडी वर्जन का खुलासा किया गया है। इसे कंपनी अगस्त में किसी समय लॉन्च कर सकती है। आइए जानते हैं कि इसमें क्या कुछ खास दिया गया है।

Citroen Basalt का कैसा है एक्सटीरियर?

इसका डिजाइन C3 Aircross कॉम्पैक्ट SUV काफी हद तक मिलता जुलता है। आगे की तरफ V-आकार के स्प्लिट LED DRLs और स्प्लिट ग्रिल दिया गया है। इसको अनूठा रूप देने के लिए बम्पर डिजाइन में बदलाव किया गया है। कूप रूफलाइन और डुअल-टोन फिनिश एलॉय व्हील्स दिया गया है। गाड़ी के पीछे की तरफ रैपअराउंड एलईडी टेल लाइट्स और ब्लैक्ड-आउट बम्पर और सिल्वर स्किड प्लेट दी गई है।

कैसा है Citroen Basalt का इंटीरियर?

बेसाल्ट का केबिन C3 एयरक्रॉस से मिलता-जुलता है। इसमें काफी शानदार डैशबोर्ड लेआउट दिया गया है, जिसमें डुअल डिजिटल डिस्प्ले और एसी वेंट के लिए समान डिजाइन दिया गया है। सिट्रोन ने इसे सफेद लेदरेट अपहोल्स्ट्री दी है। बेसाल्ट की रियर सीट बेस 87 मिमी आगे बढ़ती है ताकि बेहतर अंडरथाई सपोर्ट मिल सकें। इसके साथ ही रियर हेडरेस्ट, एक स्वचालित क्लाइमेट कंट्रोल, 6 एयरबैग जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

इसके अलावा गाड़ी में 10.25 इंच की टचस्क्रीन

सिस्टम, केबिन कम्फर्ट में वायरलेस स्मार्टफोन चार्जिंग पैड, इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल ORVMS, स्टीयरिंग-माउंटेड कंट्रोल, क्रूज़ कंट्रोल, 470L लगेज कैरी करने की क्षमता जैसे फीचर्स से लैस किया गया है।

Citroen Basalt का दमदार है इंजन

Basalt को 1.2-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड और 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ पेश किया गया है। 1.2-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड वाला इंजन 82 PS की पावर और 115 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इसे 5-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है। वहीं, 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल वाला इंजन 110 PS की पावर और 205 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इसे 6-स्पीड मैनुअल या 6-स्पीड ऑटोमैटिक से जोड़ा गया है। माइलेज की बात करें तो NA पेट्रोल के लिए 18 किमी/लीटर, टर्बो MT के लिए 19.5 किमी/लीटर और टर्बो AT के लिए 18.7 किमी/लीटर मिलेगा।

डॉक्टरों और इंजीनियरों से परे शुद्ध विज्ञान में करियर तलाशना

विजय गर्ग

तकनीकी-व्यावसायिक भूमिकाएँ तकनीकी उत्पादों को बढ़ावा देने, प्रदर्शित करने के लिए जीवन विज्ञान संगठनों के लिए प्रशिक्षित वैज्ञानिक बहुत महत्वपूर्ण हैं। उत्पादों को सही तरीके से रखने के लिए उनसे बेहतर और कौन हो सकता था - क्योंकि उन्होंने अपने शोध के दिनों में इसी तरह के उत्पादों का उपयोग किया होगा। उन्हें विभिन्न वैज्ञानिकों से मिलने और उनकी चुनौतियों को समझने और उचित समाधान देने में उनका समर्थन करने का लाभ मिलता है।

जब एक सुरक्षित करियर के लिए पेशेवर डिग्री चुनने की बात आती है, तो भारत में अभी भी कई लोग शुद्ध विज्ञान का अध्ययन करने के बजाय डॉक्टर या इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम लेना पसंद करते हैं। हालाँकि, क्या आप शुद्ध विज्ञान का अध्ययन करने के बाद कई करियर विकल्पों के बारे में जानते हैं? इस लेख में, वेंकट कौशिक पुल्ला, जो एक प्रशिक्षित वैज्ञानिक हैं और मर्क में वरिष्ठ प्रबंधक वाणिज्यिक विपणन के रूप में काम करते हैं, हमें एक वैज्ञानिक होने के लाभों और चुनौतियों के बारे में और भी बहुत कुछ बताते हैं। अंशः 1. एक प्रशिक्षित वैज्ञानिक के रूप में, शुद्ध विज्ञान में कैरियर के कौन से विकल्प हैं जिनके बारे में आपको लगता है कि लोगों को पता होना चाहिए? शुद्ध विज्ञान में तलाशने के लिए कई पहलू हैं, और यह सब आपकी रुचियों की खोज के बारे में है। इन दिनों, करियर में उन्नति के लिए बहु-विषयक कौशल सेट का होना महत्वपूर्ण है। मौजूदा कौशल और प्रौद्योगिकियां अप्रचलित होती जा रही हैं, इसलिए चाहे आपका क्षेत्र कोई भी हो, निरंतर उन्नयन आवश्यक है। एआई द्वारा नीरस कार्यों को संभालने के साथ, रचनात्मकता और अद्वितीय दृष्टिकोण अलग दिखने की कुंजी हैं। शुद्ध विज्ञान में करियर विकल्पों में शामिल हैंः अनुसंधान वैज्ञानिक यह संभवतः शुद्ध विज्ञान स्नातकों के लिए सबसे स्पष्ट विकल्पों में से एक है। अनुसंधान वैज्ञानिक शिक्षा जगत, सरकारी अनुसंधान संस्थानों और फार्मास्यूटिकल्स, जैव प्रौद्योगिकी और सामग्री विज्ञान जैसे निजी उद्योगों की प्रयोगशालाओं में काम करते हैं। वे प्रयोग करते हैं, डेटा का विश्लेषण करते हैं और वैज्ञानिक खोजों में योगदान देते हैं। डेटा वैज्ञानिक बड़े डेटा और एनालिटिक्स के बढ़ने के साथ, ऐसे डेटा वैज्ञानिकों की मांग बढ़ रही है जो जटिल डेटा सेट की व्याख्या करने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण और कम्प्यूटेशनल तकनीकों को लागू कर सकते हैं। शुद्ध विज्ञान स्नातकों के पास अक्सर मजबूत विश्लेषणात्मक कौशल और गणित और सांख्यिकी में एक ठोस आधार होता है, जो उन्हें इस भूमिका के लिए उपयुक्त बनाता है। विज्ञान संचार जो वैज्ञानिक शोध निष्कर्षों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर सकते हैं, उन्हें फार्मा कंपनियों द्वारा वैज्ञानिक लेखकों के रूप में नियुक्त किया जाता है। वे लेखन, पत्रकारिता और मल्टीमीडिया के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान और जनता के बीच की दूरी को पाटते हैं। . विज्ञान पत्रकार वैज्ञानिक अनुसंधान और आम जनता के बीच अंतर को पाटने, दर्शकों को महत्वपूर्ण खोजों और विकासों के बारे में सूचित करने और शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेटेंट परीक्षक पेटेंट परीक्षक यह आकलन करते हैं कि क्या आविष्कार पेटेंट योग्यता की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और नवाचार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शुद्ध विज्ञान की पृष्ठभूमि इस पेशे के लिए आवश्यक तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करती है। तकनीकी-व्यावसायिक भूमिकाएँ तकनीकी उत्पादों को बढ़ावा देने, प्रदर्शित करने के लिए जीवन विज्ञान संगठनों के लिए प्रशिक्षित वैज्ञानिक बहुत महत्वपूर्ण हैं। उत्पादों को सही तरीके से रखने के लिए उनसे बेहतर और कौन हो सकता था - क्योंकि उन्होंने अपने शोध के दिनों में इसी तरह के उत्पादों का उपयोग किया होगा। उन्हें विभिन्न वैज्ञानिकों से मिलने और उनकी चुनौतियों को समझने और उचित समाधान देने में उनका समर्थन करने का लाभ मिलता है। विज्ञान शिक्षा और आउटरीच शुद्ध विज्ञान स्नातक स्कूलों, संग्रहालयों और शैक्षणिक संस्थानों में विज्ञान शिक्षकों के रूप में करियर बना सकते हैं, भविष्य के वैज्ञानिकों को प्रेरित और सलाह दे सकते हैं। क्लिनिकल रिसर्च एसोसिएट (सीआरए) फार्मास्युटिकल और जैव प्रौद्योगिकी उद्योगों में, सीआरए प्रोटोकॉल और नियामक आवश्यकताओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए नैदानिक परीक्षणों की देखरेख करते हैं। शुद्ध विज्ञान की पृष्ठभूमि नैदानिक अनुसंधान के अंतर्निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने के लिए आवश्यक मूलभूत ज्ञान प्रदान करती है। गुणवत्ता आश्वासन/गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूए/क्यूसी) विशेषज्ञ क्यूए/क्यूसी विशेषज्ञ सुनिश्चित करते हैंकि उत्पाद, प्रक्रियाएं और सिस्टम गुणवत्ता मानकों और नियामक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। फार्मास्यूटिकल्स और जैव प्रौद्योगिकी जैसे उद्योगों में, वे उत्पाद की गुणवत्ता और सुरक्षा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उद्यमिता और नवाचारः कई शुद्ध विज्ञान स्नातकों में उद्यमशीलता की आकांक्षाएं और नवाचार करने की क्षमता होती है। सरकार प्रारंभिक बीज अनुदान के साथ उनकी आकांक्षाओं का समर्थन करती है, जिससे उन्हें अपनी खुद की कंपनियां शुरू करने, नई तकनीक विकसित करने या उद्योग भागीदारों के साथ सहयोग करने की अनुमति मिलती है। इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि शुद्ध विज्ञान का अध्ययन न केवल इन विशिष्ट कैरियर पथों के द्वार खोलता है बल्कि व्यक्तियों को आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक कौशल से भी सुसज्जित करता है जिन्हें विभिन्न उद्योगों में अत्यधिक महत्व दिया जाता है। जैसे-जैसे दुनिया तकनीकी और वैज्ञानिक रूप से आगे बढ़ रही है, कुशल शुद्ध विज्ञान स्नातकों की मांग बढ़ती रहेगी, जिससे यह एक आशाजनक और फायदेमंद करियर विकल्प बन जाएगा। 2. वैज्ञानिक बनने की चुनौतियाँ क्या हैं? वैज्ञानिक बनना एक पुरस्कृत कार्य है लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी आती हैं जिनसे वैज्ञानिक बनने के इच्छुक लोगों को अवगत होना चाहिएः शिक्षण और प्रशिक्षण वैज्ञानिक बनने में आम तौर पर स्नातक, स्नातकोत्तर और अक्सर पीएचडी जैसी उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त करना शामिल होता है। इसके लिए समर्पण, दृढ़ता और एक मजबूत शैक्षणिक नींव की आवश्यकता होती है। प्रतिस्पर्धी वातावरण सीमित संसाधनों और योग्य आवेदकों की उच्च संख्या के कारण फंडिंग, अनुदान और अनुसंधान पदों को सुरक्षित करने में चुनौतियों के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है। समय और धैर्य वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए अक्सर लंबे समय तक प्रयोग, डेटा विश्लेषण और लेखन की आवश्यकता होती है। प्रगति धीमी हो सकती है, सफलताएँ प्राप्त करने में वर्षों या दशकों का समय लग सकता है। फंडिंग और संसाधन अनुसंधान के संचालन के लिए उपकरण, सामग्री और कभी-कभी कर्मियों के लिए धन की आवश्यकता होती है। पर्याप्त फंडिंग सुरक्षित करना एक निरंतर चुनौती हो सकती है, खासकर शुरुआती करियर शोधकर्ताओं के लिए। प्रकाशन और सहकर्मी समीक्षा करियर में उन्नति और पहचान के लिए प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिकाओं में शोध प्रकाशित करना आवश्यक है। सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया कठोर और कभी-कभी व्यक्तिपरक हो सकती है, जिसके लिए दृढ़ता और लचीलेपन की आवश्यकता होती है। नवाचार और पुनरुत्पादकता को संतुलित करना नवोन्मेषी अनुसंधान को आगे बढ़ाने और परिणामों की प्रतिलिपि प्रस्तुत करने योग्यता सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक अखंडता और कठोरता बनाए रखना आवश्यक है लेकिन प्रतिस्पर्धी माहौल में चुनौतीपूर्ण हो सकता है। करियर में अस्थिरता अन्य व्यवसायों की तुलना में विज्ञान में करियर पथ कम पूर्वानुमानित हो सकते हैं। अल्पकालिक अनुबंध, पोस्टडॉक्टरल पद और अनुसंधान के अवसरों के लिए स्थानांतरित होने की आवश्यकता आम है, जिससे अनिश्चितता और अस्थिरता पैदा होती है। कार्य संतुलन वैज्ञानिक अनुसंधान की मांगलिक प्रकृति कार्य-जीवन संतुलन को प्रभावित कर सकती है। यदि प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं किया गया तो लंबे समय, समय सीमा और प्रकाशित करने का दबाव तनाव और जलन का कारण बन सकता है। इन चुनौतियों के बावजूद, विज्ञान में करियर ज्ञान, नवाचार और सामाजिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देने का अवसर प्रदान करता है। इन चुनौतियों पर काबू पाने के लिए लचीलेपन, खोज के प्रति जुनून और वैज्ञानिक प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। 3. एक प्रशिक्षित वैज्ञानिक होने के नाते, आप एक वाणिज्यिक विपणन प्रबंधक के रूप में काम करते हैं। कृपया अपना जॉब प्रोफाइल विस्तृत करें। मर्क में एक वाणिज्यिक विपणन प्रबंधक के रूप में, मेरा काम वैज्ञानिक नवाचारों और उत्पादों को बढ़ावा देने और उनका व्यावसायीकरण करने के इर्द-गिर्द घूमता है। यहां कुछ प्रमुख भूमिकाएं दी गई हैंघ जिम्मेदारियाँः उत्पाद स्थिति निर्धारण और ब्रांडिंगः अपने उत्पादों को बाज़ार में प्रभावी ढंग से स्थापित करने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना। सम्मोहक संदेश और ब्रांडिंग पहल बनाना जो हमारे लक्षित दर्शकों को पसंद आए। विपणन अभियानः डिजिटल मार्केटिंग और सम्मेलनों जैसे विभिन्न चैनलों पर मार्केटिंग अभियानों की योजना बनाना और उन्हें क्रियान्वित करना। ग्राहकों से मुलाकात कर उनकी जरूरतों और बाजार के रुझान को समझना। प्रचार सामग्री विकसित करने और कार्यक्रम चलाने के लिए रचनात्मक टीमों के साथ सहयोग करना। डेटा विश्लेषणः विपणन अभियानों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए डेटा का विश्लेषण करना। वर्कफ़्लो अंतराल की पहचान करना और लक्षित अभियान विकसित करना। बिक्री समर्थनः बिक्री बढ़ाने में उनके प्रयासों का समर्थन करने के लिए प्रभावी उपकरण, सामग्री और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए बिक्री टीम के साथ मिलकर काम करना। ग्राहक वचनबद्धताः वेबिनार, रोड शो और सम्मेलनों के माध्यम से प्रमुख राय वाले नेताओं के साथ संबंध बनाना। बाजार का विकासः मौजूदा उत्पादों के लिए नए बाज़ार अवसरों और संभावित अनुप्रयोगों की पहचान करना। बाज़ार में अपनी उपस्थिति बढ़ाने और विकास को गति देने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना। कुल मिलाकर, मेरी भूमिका वैज्ञानिक नवाचार और व्यावसायिक सफलता के बीच अंतर को पाटती है, यह सुनिश्चित करती है कि हमारे उत्पाद ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करते हैं और व्यावसायिक उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

संपादक की कलम से

आरक्षण के उप-वर्गीकरण

अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के आरक्षण में ही आरक्षण के उप-वर्गीकरण पर 7 न्यायाधीशों की संविधान पीठ का फैसला सामाजिक न्याय के लिए 'मील का पत्थर' साबित हो सकता है। मंडल के बाद यह दूसरा ऐतिहासिक फैसला है। 'मील का पत्थर' तभी साबित हो सकता है, जब क्रीमीलेयर वाला फैसला लागू किया जाएगा। आरक्षण में उप-वर्गीकरण का अधिकार राज्य सरकारों को दिया गया है। यह अभी तक राष्ट्रपति के पास ही सुरक्षित था। संसद में ही प्रस्ताव पारित कर, किसी भी जाति को, आरक्षण के दायरे में लाया जा सकता था अथवा जाति को आरक्षण से बाहर भी किया जा सकता था। बहरहाल वह अधिकार यथावत रहेगा, लेकिन एससी और एसटी अपने आरक्षण के कोटे में, दबी-कुचली, पिछड़ी, विपन्न जातियों का, उप-वर्गीकरण कर सकेंगे। फिलहाल दलित और आदिवासियों को शिक्षा और नौकरियों में क्रमशः 15 फीसदी और 7.5 फीसदी आरक्षण हासिल है। संविधान पीठ के दो कथन महत्वपूर्ण हैं। एक, एससी-एसटी के कोटे में कुछ जातियों का उप-वर्गीकरण करने से संविधान के अनुच्छेद 14 और अनुच्छेद 341 का उल्लंघन नहीं होता। समानता का सिद्धांत यथावत रहेगा। दूसरे, आरक्षण एक पीढ़ी तक सीमित कर देना चाहिए। यदि पहली पीढ़ी आरक्षण का लाभ लेकर उच्च स्थिति तक पहुंच गई है, तो दूसरी पीढ़ी को आरक्षण का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। जस्टिस बीआर गवई ने एससी-एसटी पर भी, ओबीसी की तरह, 'क्रीमीलेयर' लागू करने की बात कही है। यह विवादास्पद मुद्दा बन सकता है। आरक्षण के आधार पर जो दशकों से राजनीति करते आ रहे हैं अथवा आरक्षण के कारण ही राजस्थान की एक खास जाति में पीढ़ी-दर-पीढ़ी आईएएस अफसर बनते रहे हैं, वे अपने हिस्से को बंटने क्यों देंगे? संविधान-निर्माता बाबा अंबेडकर के पौत्र प्रकाश अंबेडकर ने संविधान पीठ के फैसले की आलोचना की है और इसे 'सामाजिक पूर्वाग्रह' करार दिया है। उनकी आशंका है कि दलितों का कोटा कम होने लगेगा। बहरहाल संविधान पीठ ने कहा है कि सरकार को एससी-एसटी श्रेणी के बीच 'क्रीमीलेयर' की पहचान करने और उन्हें आरक्षण के दायरे से बाहर करने की नीति जरूर तैयार करनी चाहिए। यह अवधारणा भी स्पष्ट होनी चाहिए।

ओबीसी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को आरक्षण उनकी सालाना आय के आधार पर तय किया जाता है। क्रीमीलेयर की सीमा 8 लाख रुपए सालाना है। यानी करीब 67,000 रुपए महीना। यह वर्ग विपन्न कैसे हो सकता है? दूसरी ओर वे भारतीय भी हैं, जो 375 रुपए रोजाना कमाने में भी असमर्थ हैं। बेहतर होता कि क्रीमीलेयर पर भी न्यायिक फैसला सुनाया जाता। बहरहाल फैसले के जोखिम भी सामने आने लगे हैं। पर्याप्त संभावना है कि एससी-एसटी अब एक समूह नहीं रह जाएगा। उनके भीतर ही अलग-अलग वर्ग खड़े हो जाएंगे और फिर उनसे जुड़ी नई राजनीति उबलने लगेगी। केंद्र सरकार में ही एनडीए की सहयोगी लोजपा (रामविलास) ने फैसले पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है, ताकि एससी-एसटी वर्ग में भेदभाव न हो और वे कमजोर न पड़ें। चूंकि इसे राज्य लागू कर सकेंगे, लिहाजा यह सवाल मौजूं है कि कब तक यह निर्णय लागू किया जा सकेगा। एससी-एसटी की गणना उपलब्ध है, लिहाजा जातीय जनगणना अनिवार्य नहीं है। राज्य सरकारें विशेषज्ञ-पैनल बना सकती हैं। वे शोध और डाटा के जरिए बताएंगे कि कौनसी जाति सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक तौर पर पिछड़ी है और उन्हें आरक्षण के दायरे में लाना बहुत जरूरी है। पीठ ने 2004 में 'ईवी चिन्नैया बनाम आंध्र' वाले मामले में दिए गए फैसले को रद्द कर दिया है। उस फैसले में कहा गया था कि राज्य सरकार तय आरक्षण में उप-वर्गीकरण नहीं बना सकती। ताजा फैसला पंजाब का है। दरअसल पंजाब सरकार ने 2006 में कानून बनाया था कि राज्य में एससी-एसटी आरक्षण में 50 फीसदी आरक्षण, पहली प्राथमिकता के तहत, वाल्मीकि और मजहबी सिखों को मिलेगा। पंजाब उच्च न्यायालय ने 2010 में इसे रद्द कर दिया था।

कविता

कहने को बहुत कुछ हैं

कहने को बहुत कुछ हैं
पर कह नहीं पा रहे।
दिल में भरा है गुबार,
उसे सह नहीं पा रहे।
कब तक बोझ लिए,
रमते व घूमते रहोगे।
ज्यादा मत बहलाओ,
मुस्कुराकर ना सहलाओ।
आने भी दो बाहर उसे,
तुम्हें सुकून ही मिलेगा।
मचा था जो तहलका,
वह जरूर होगा हल्का।
बस ज़ुबा खोलने की देरी है,
सारी कायनात तेरी-मेरी है।
इन अनमोल अश्कों को,
तुम ना बहाना अकेले में।
अब चाहे मुझे मिलो,
किसी भीड़ या मेले में।
इंतजार कर रही है बाहें,
बस फेरना मत निगाहें।
क्योंकि, कहने को बहुत कुछ हैं
बहुत कुछ हैं।

कविता : फ़िक्र

घर से निकला आदमी,
खुशनुमा चेहरा लिए
दिनचर्या में हुआ लीन।
भले ही इस दौरान,
सुख चैन गया हो छीन।
गर आ जाए एक कॉल,
पूछ ले अर्धांगिनी हाल।
तब आए सुकूनभरी आवाज़,
रकैसे हो, कहां हो और
घर कब तक आओगेर।
थकान की निद्रा को
चीरती हुई मिठास।
रअपनेपनर और रफिक्रर का,
दिलाती है एहसांस।
तब बरबस ही निकलता,
संजय से एक ही संवाद
रअरे अरे हमसफर इतने सवालर।
बरबस ही निकला जवाब,
रमैं रास्ते में हूं, आ रहा हूंर।
मन ही मन वो बुदबुदाया,
सच कितनी रफिक्रर है
तुम्हें मेरे घर आने की।

-संजय एम .तराणेकर
(कवि, गायक व समीक्षक)
व्हाट्सएप नंबर
9826025986

बरसात की बूंदें

विजय गर्ग

तपती गर्मी के बाद किसी शाम मेघ की गर्जना के साथ अगर बारिश होने लगे, तो बहुत सारे लोग घर में बंद होकर बरसात के गुजर जाने का इंतजार करने लगते हैं। लेकिन अगर ऐसे माहौल में जरा खिड़की से बाहर झांका जाए तो दूर तक फैले खेत और भगती प्रकृति किसी भी प्रकृति प्रेमी के मन को बांध ले सकती है । जिस तरह जीवन के रंग बदलते रहते हैं, उसी तरह जीने के लिए मौसम का बदलना भी जरूरी है। बदलते मौसम के लिए हमारा अनुकूलन हमारे अस्तित्व को परखता है। हम हैं और हम अपने होने को प्रत्येक स्थिति में साबित भी करते हैं । मौसम चाहे कोई भी हो, प्रकृति से हमारे समन्वय का एक प्रतीक बनता है। ठीक इसी प्रकार जीवन चाहे जैसा भी हो, अपने मूल स्वभाव को नहीं भूलता। सामान्य लोगों के जीवन में स्थिर कुछ भी नहीं रहता । देखा जाए तो जीवन के दो पक्ष ही हम पर हावी रहते हैं- एक, जीविका की जद्दोजहद और दूसरा संवेगात्मक आधार । एक मध्यमवर्गीय परिवार न जाने कितनी आंधियों को इन्हीं दो पृष्ठभूमियों पर झेलता जाता है। मगर जिजीविषा नहीं मरती । शायद यही है जीवन की मूल - जिजीविषा । हम जीना पसंद करते है । परिस्थितियों से हारकर हम अगर जीवन को त्याग देते तो धरती कब की समाप्त हो गई होती । हम गिरते हैं, चोट खाते हैं, पर फिर उठते जरूर हैं, क्योंकि हमारे लिए रुकने का मतलब मृत्यु है । उठना ही है, चलना ही है और विपरीत परिस्थितियों से लड़ना ही है- यही मानवधर्म है। ठीक यही बात हमें बरसात का मौसम भी सिखा जाती है। जब यह धरती ऊष्णता और घुटन से बोझिल हो जाती है तो वर्षा की बूंदें आकर इसके अंतर को धो जाती है । तब धुल जाते हैं सारे दुख, सारे पाप, तन और मन पर पड़ी हुई गंदगी। नई निखरती पल्लवों के साथ फिर उल्लसित हो उठती है धरा... बोने लगती है बीज भविष्य के हरियाली की। ठीक इसी तरह हम इंसानों को भी इस बारिश के पानी में भीगकर अपने तन और मन के क्लेश, कुंठा, द्वेष, सबका निस्तारण कर देना चाहिए। ठंड, गर्मी और बरसात - ये बदलते मौसम आते-जाते रहते हैं, लेकिन हर बार हम इंसानों के समुदाय को कुछ न कुछ सीख दे जाते हैं । इस धरती पर हम इंसान ही एकमात्र ऐसे जीव हैं, जिसका दावा है कि उसे सही और गलत की पहचान होती है।

इस वसुधा को एक कुटुंब मानकर निस्वार्थ भाव से जीवन की धारा में बहते जाना ही मनुष्य का मकसद होना चाहिए । हम ऐसी प्रजाति हैं, जो जीवन देने में विश्वास करता है, लेकिन आजकल के समाज में 'स्व' का भाव ज्यादा विस्तारित हो गया हैं। आत्मकेंद्रित हो मनुष्य आज एक दूसरे का ही प्रतिरोधी बन गया है और उचित अनुचित का विचार त्याग हर वह काम करने के लिए प्रस्तुत हो जाता है, जिसमें उसका स्वार्थ हो । मन भाव दूषित हो गए हैं। द्वेष, घृणा, नफरत, बदला आदि की भावना का प्रादुर्भाव हो गया है। भावनाओं की इस फैलती विकृति ने जीवन का मूल ही खो दिया है। सृष्टि के बनाए धरती का पर्याय प्रेम और त्याग हैं । ये विचार अंतिम सांसें गिन रही हैं । हम मनुष्यों को चाहिए कि इन कलुषित भावों को धोकर जीवन के जीवंत पक्ष पर फिर से काम करें।

हमारा पोषण हमारे अन्न से होता है, लेकिन हमारी अंतस का पोषण हमारे भाव से होता है। अगर हम अपने अंदर विपरीत सोच को विकसित कर लेंगे तो हमारे जीवन का विकास भी विपरीत ही होने लगेगा । हम दूसरों को घाव देकर सोचते हैं कि हमने बदला ले लिया। दूसरों के साथ छल करके हम खुश होते हैं कि किसी को मूर्ख बना दिया गया, लेकिन हम यह नहीं समझना चाहते कि वह घाव, वह छल पहले हमारी आत्मा को चोटिल करेंगे और हम पतन
की ओर मुखातिब हो जाएंगे । आज की तारीख में हो रहे दंगा- फसाद इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य का दिमाग कितना भ्रष्ट हो चुका है। इन असामाजिक कार्यों को करते हुए वह इतना भी नहीं सोचता कि इसका परिणाम क्या होगा। उसकी आत्मा इतनी दूषित हो चुकी है कि किसी की हानि करते हुए उसे सुख की प्राप्ति होती है। वर्तमान प्रसंग में देखा जाए तो आसपास हो रहे अमानवीय कृत्यों ने लोगों की जड़ों को तोड़ा है। मानव अपने मूल प्रवृत्ति से उखड़ता जा रहा है। जीने के लिए जिजीविषा और आत्मा की उत्कंठा दोनों पर ही प्रहार किए गए हैं। बात बस यह है कि यह खुद मनुष्य ही तय कर सकते हैं कि हमें किस दिशा में अग्रसर होना है, सुधरने का कोई वक्त नहीं होता । अब भी समय नहीं बीत गया है। अगर आज भी हम यह निर्णय ले लें कि हमें अपने अंदर की बुराई को मारकर अच्छाई को जिंदा करना है तो भी जीवन सुंदर बन सकता है। हमें सोचना होगा कि हम आने वाली पीढ़ी को क्या दे कर जाएंगे- अपने कुत्सित मन के आवेग या अपनी आत्मा की निर्मलता । हमारा जीवन बरसात की बूंदों की तरह ही है । अपने अंदर स्वच्छता को महत्त्व देते हुए बढ़ना ही इस जीवन का सार है। शायद इसी के निमित्त वर्षा का भी आगमन होता है। अपने जीवन को स्वच्छ बनाने के साथ साथ अपनी आत्मा को सुंदर बनाकर प्रकृति के आंगन में रिमझिम बूंदों का आनंद लेना ही जीवन है।

सीखने का विकास

विजय गर्ग

इसके लिए निर्णय, संवेदनशीलता, दूरदर्शिता और नए विचारों को आत्मसात करने की दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है वास्तविक दुनिया में बातचीत करना मुश्किल हो सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वास्तविक जीवन की बात आती है तो बचपन की बहुत सी प्रारंभिक सीखों में पर्याप्त संशोधन की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर, एक बच्चे को कई सिद्धांत सिखाए जाते हैं जो बड़े होने पर बिल्कुल अव्यावहारिक हो जाते हैं। आमतौर पर, एक बच्चे से कहा जाएगा कि वह अपने माता-पिता को बताए बिना कभी कुछ न करें, जबकि वास्तविक जीवन में यह न तो संभव है और न ही व्यावहारिक है। सच तो यह है कि बचपन की सीख बुनियादी बातों के बारे में होती है; जैसे-जैसे कोई आगे बढ़ता है, वह इसे संशोधित या अंशांकित करना सीखता है। इसका संबंध बच्चे के दिमाग और कुछ सिद्धांतों की स्थापना से है जिन्हें जीवन के अनुभव परिभाषित या संशोधित कर सकते हैं। एक बच्चे को समानांतर रेखाओं के बारे में सिखाने के मामले पर विचार करें। बच्चे को सिखाया जाता है कि समानांतर रेखाएँ ऐसी रेखाएँ होती हैं जो कभी नहीं मिलतीं। यह उसके उद्देश्यों के लिए काफी अच्छा है। जैसे-जैसे कोई परिपक्व होता है और कुछ वर्ष बढ़ता है, वयस्कता में परिवर्तन करने वाला बच्चा सीखता है कि समानांतर रेखाएँ मिलती हैं, लेकिन वे 'अनंत' पर मिलती हैं। ऐसे ही उदाहरण अन्यत्र भी उद्धृत किये जा सकते हैं। हालाँकि, इस मुद्दे पर एक सरल प्रस्ताव यह है कि सीखना सीखने वाले की क्षमता और क्षमता से संबंधित है। एक ही सिद्धांत में कई संशोधन या परिवर्तन भी हो सकते हैं। जैसे-जैसे कोई वयस्कता में आता है, वह जीवन के बारे में कई अन्य पेचीदगियां सीखता है, और उनमें से कई को केवल अनुभव के माध्यम से ही दोबारा सीखा जा सकता है। यहां व्यक्ति की निरंतर सीखने और आत्मसात करने की क्षमता को तेज करने की आवश्यकता है। आमतौर पर, वयस्क, जैसे-जैसे जीवन से गुजरता है, विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलता है, और कई अन्य लोगों के साथ सह-अस्तित्व की स्पष्ट आवश्यकता होती है। किसी व्यक्ति का निर्णय यह तय करने के लिए निर्णायक बन जाता है कि सत्य क्या है और उसे कहाँ स्पष्ट रहना है या उससे होकर गुजरना है। वयस्क शिक्षा इसी के बारे में है, और यह एक आजीवन आवश्यकता है जिसे प्रत्येक चरण में महसूस किया जाता है। कभी-कभी अजीब स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, खासकर यदि कोई कहावतों/कहावतों/लोक कहावतों और यहां तक कि बड़ों के ज्ञान के माध्यम से सीखता है। इसके एक उदाहरण से बात स्पष्ट हो सकती है। संस्कृत में एक कहावत है रसत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यम् प्रियम्र। "मोटे तौर पर अनुवादित, इसका मतलब है, सच बोलो, लेकिन सुखद बोलो। अगर कोई सच कड़वा है तो उसे बोलने की जरूरत नहीं है।" यह वांछनीय है या नहीं यह एक विवादास्पद मुद्दा है। इससे भी बड़ी बात यह है कि अन्य कहावतें ऊपर उद्धृत की तुलना में बहुत भिन्न पाई जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, एक और संस्कृत कथन है रसत्यमेव जयतेर जिसका अंग्रेजी में मुफ्त अनुवाद यह होगा कि रसत्य की ही जीत होती हैर। दोनों कथन स्पष्ट रूप से दो अलग-अलग संदर्भों में हैं और दो अलग-अलग अर्थ रखते हैं। दोनों के बीच विरोधाभास का तत्व है. यहीं पर वयस्क शिक्षा अपना एक विशेष आवरण प्राप्त करती है। वह विशेष चीज़ क्या है यह अनुभव और प्रदर्शन का विषय है। कुछ लोग जो बचपन में बार-बार इस बात पर जोर देते थे कि उन्हें हमेशा सच बोलना चाहिए, उन्हें केवल सच बोलने की आदत इतनी ज्यादा हो जाती है कि वे बातचीत में आक्रामक हो जाते हैं। ऐसा उनकी बदनीयती के कारण नहीं, बल्कि उनका अंदाज ही 'आक्रामक' हो गया. इस तरह के आपत्तिजनक व्यवहार की भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। आख़िरकार, व्यवहारकुशलता एक ऐसी चीज़ है जो वैकल्पिक अतिरिक्त नहीं है, यह जीवन के लिए आवश्यक है। व्यवहारकुशल होने का मतलब झूठ बोलना या असत्य होना नहीं है। यह केवल एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रशिक्षित करता हैऔर भावनाएँ. यह पहचानने के महत्व को भी बढ़ाता है कि सभी इनपुट बेहतर और बेहतर व्यवहार में योगदान करते हैं। ऐसी स्थिति बनाना आवश्यक है जिसमें सभी को लाभ हो और बेहतर वातावरण स्थापित हो। यदि कुंदता सुधार के बजाय चोट पहुंचाती है, तो इससे जीवन की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है, जो किसी भी कार्रवाई का उद्देश्य नहीं हो सकता है। स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि सीखना कई परतों वाली एक जटिल घटना है। इसके लिए निर्णय संवेदनशीलता और दूरदर्शिता की आवश्यकता है। उपरोक्त किसी भी रिश्ते के अभाव में, उनमें समझौता हो सकता है। आख़िरकार, यदि रिश्ता ही ख़त्म हो जाए, तो कोई पूछ सकता हैः इनपुट किस बारे में है? यह मुद्दा जीवन जीने के लिए मौलिक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य एक मिलनसार जानवर है, और जीवन जीने के लिए सामूहिक अनुभव की आवश्यकता होती है। इसलिए सीखना एक आजीवन अभ्यास है जिसमें निरंतर भागीदारी और विकसित होने की क्षमता की आवश्यकता होती है। सीखने के लिए बाहरी इनपुट बेशक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उसका आंतरिककरण मूल है। दुर्भाग्यवश, जहां शिक्षण पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, वहीं उतना ही ध्यान सीखने की प्रक्रिया के तरीकों पर भी दिया गया है। वास्तव में सीखने की क्षमता और सीखने के तरीकों की निश्चित सीमाएँ हैं। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे पहले की तुलना में अधिक व्यापक रूप से मान्यता देने की आवश्यकता है, खासकर जब से यह सीखने के बड़े सिद्धांतों में एकीकृत नहीं होता है। वास्तव में, किसी को इस बात पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि सीखने की प्रक्रिया का पुनरीक्षण कब और कैसे मौलिक हो जाता है। संक्षेप में, सीखने की निरंतर प्रकृति और उस सीखने को जीवित रखने में अपनी केंद्रीय भूमिका को पहचानना महत्वपूर्ण है। एक शिक्षक केवल प्रक्रिया में मदद कर सकता है लेकिन किसी शिक्षार्थी की सीख का स्थान नहीं ले सकता।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार

72 फीसदी टैक्सपेयर्स ने न्यू टैक्स रिजीम को चुना, क्या अब पुरानी कर व्यवस्था को खत्म करेगी सरकार ?

परिवहन विशेष न्यूज

नई टैक्स रेजिमे व ओल्ड टैक्स रेजिमे आईटीआर फाइल करने की डेडलाइन 31 जुलाई थी जो अब खत्म हो चुकी है। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कहना है कि कुल 7 करोड़ से अधिक लोगों ने आईटीआर फाइल किया। इसमें से 72 फीसदी करदाताओं ने न्यू टैक्स रिजीम को चुना। इससे सवाल उठता है कि क्या अब सरकार ओल्ड टैक्स रिजीम को खत्म कर देगी।

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्त वर्ष 2020-21 के केंद्रीय बजट में न्यू टैक्स रिजीम को पेश किया था। इसका मकसद टैक्स सिस्टम की जटिलताओं को दूर करके उसे आसान बनाना था। इसमें आयकर से छूट की सीमा अधिक थी, लेकिन करदाता निवेश या किसी और मध्यम से अतिरिक्त छूट का लाभ नहीं ले सकते थे। इस साल के बजट में वित्त मंत्री ने न्यू टैक्स रिजीम के टैक्स स्लैब में बदलाव करने के साथ स्टैंडर्ड डिडक्शन की लिमिट भी बढ़ा दी। इससे यह कर व्यवस्था और भी आकर्षक बन गई।

72 फीसदी ने नई कर व्यवस्था को चुना

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के आंकड़े बताते हैं कि असेसमेंट ईयर 2024-25 के लिए 7.28 करोड़ करदाताओं ने इनकम टैक्स रिटर्न (ITR) दाखिल किया है। इनमें से 5.27 करोड़ ने नई और 2.01 करोड़ ने पुरानी कर व्यवस्था को चुना। इसका मतलब है कि 72 फीसदी टैक्सपेयर्स ने नई और 28 फीसदी ने पुरानी कर व्यवस्था से अपना रिटर्न दाखिल किया।

इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि सरकार ने पिछले साल न्यू टैक्स रिजीम की डिफॉल्ट कर व्यवस्था बना दिया था। इसका मतलब कि अगर आप खुद से कोई टैक्स रिजीम नहीं चुनते, तो आपका रिटर्न ऑटोमैटिक नई कर व्यवस्था के तहत दाखिल होगा। लेकिन, टैक्सपेयर्स को पूरी छूट थी कि वे अपनी सहूलियत के हिसाब से टैक्स रिजीम चुन सकें।

न्यू टैक्स रिजीम को क्यों चुन रहे करदाता

नई कर व्यवस्था की सबसे बड़ी खासियत है इसका सरल होना। अगर आप पहली बार भी रिटर्न फाइल कर रहे हैं, तो आप न्यूज आर्टिकल या फिर यूट्यूब वीडियो के सहारे आसानी से रिटर्न फाइल कर सकते हैं। इसमें नियम-कायदों की अधिक झंझट नहीं है। इसने कई कटौतियों और छूटों से जूझने को बीते जमाने की बात बना दिया है। यह चीज टैक्सपेयर्स को काफी पसंद आ रही है।

भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) का कहना है कि नई कर व्यवस्था के स्लैब में टैक्स देनदारी की स्पष्ट और सीधी गणना होती है। इससे समय की काफी बचत होती है। साथ ही, त्रुटियों और गलतफहमी की गुंजाइश कम

हो जाती है। कई स्रोतों से आय कमाने वाले करदाताओं को पहले रिटर्न दाखिल करना मुश्किल काम लगता था। नई कर व्यवस्था ने उनकी मुश्किल को आसान कर दिया है।

ओल्ड टैक्स रिजीम को खत्म करेगी सरकार ?

सरकार नई कर व्यवस्था को जिस तरह से बढ़ावा दे रही है, उससे साफ जाहिर है कि उसका इरादा ओल्ड टैक्स रिजीम को खत्म करने पर है। एक्सपर्ट का भी मानना है कि दो टैक्स रिजीम होने से करदाताओं की उलझनें बढ़ रही हैं। सरकार का न्यू टैक्स रिजीम लाने का मकसद ही टैक्सपेयर्स की उलझन कम करना था। ऐसे में दो कर व्यवस्थाएं रहने का का कोई तुक नहीं बनता।

एक ही टैक्स रिजीम रहने से टैक्सपेयर्स की कई उलझनें अपनेआप खत्म हो जाएंगी। वे आईटीआर भी ज्यादा आसानी से फाइल कर पाएंगे। एक्सपर्ट का मानना है कि सरकार अभी कुछ और करदाताओं के नई कर व्यवस्था में स्विच करने का इंतजार कर सकती है। खासकर, अधिक इनकम वालों के। फिर वह पुरानी कर व्यवस्था को खत्म करके न्यू टैक्स रिजीम को आगे बढ़ाएगी।

एक साल में 150 फीसदी का रिटर्न देने वाली कंपनी को मिला बड़ा ऑर्डर, शेयरों पर दिखेगा असर

टेक्समैको रेल एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड को मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन (MRVC) से 243 करोड़ रुपये का बड़ा ऑर्डर मिला है। इसका असर टेक्समैको के शेयरों पर दिख सकता है। टेक्समैको के शेयरों में पिछले एक साल में 150 फीसदी का बंपर रिटर्न दिया है। टेक्समैको रोलिंग स्टॉक हाइड्रो-मैकेनिकल उपकरण स्टील कास्टिंग और रेल ईपीसी पुल और अन्य स्टील इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के व्यवसाय में शामिल है।

नई दिल्ली। इंजीनियरिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी टेक्समैको रेल एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड के शेयरों में पिछले एक साल में 150 फीसदी का बंपर रिटर्न दिया है। अब कंपनी को मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन (MRVC) से 243 करोड़ रुपये का बड़ा ऑर्डर मिला है। टेक्समैको को यह ऑर्डर महाराष्ट्र में दो रूट पर पावर सप्लाई प्रोजेक्ट्स के लिए मिला है।

टेक्समैको की हायर-स्पेशलाइज्ड EPC डिविजन- ब्राइट पावर पर इस पूरे प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी होगी। वह पावर सप्लाई प्रोजेक्ट की डिजाइन, कंस्ट्रक्शन, इंस्टालेशन और टेस्टिंग का काम करेगी। कंपनी के मुताबिक, उसका काम दो 25 केवी ट्रैक्शन सबस्टेशन और उससे जुड़ी अन्य चीजों का निर्माण करना है।

टेक्समैको के वाइस चेयरमैन इंद्रजीत मुखर्जी ने कहा, ₹यह ऑर्डर हमारे लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह रेलवे इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में हमारी स्थिति को मजबूत करता है।₹ उन्होंने कहा कि कंपनी इस ऑर्डर को लेकर काफी आशावादी है और उम्मीद करती है कि यह उसकी ग्रोथ में योगदान देगा।

टेक्समैको के शेयरों का हाल

टेक्समैको के शेयर केंद्रीय बजट के बाद से काफी सुस्त पड़े हैं, क्योंकि इसमें रेलवे सेक्टर के लिए बड़ा और खास एलान नहीं हुआ। पिछले एक महीने में टेक्समैको ने सिर्फ 3 फीसदी का रिटर्न दिया। वहीं, पिछले 6 महीने में कंपनी के शेयरों से निवेशकों को 28 फीसदी का मुनाफा हुआ। लेकिन, पिछले एक साल की बात करें, तो टेक्समैको ने 151.22 फीसदी का बंपर रिटर्न दिया है।

ब्रोकरेज भी टेक्समैको भी बुलिश हैं। नुवामा ने टेक्समैको को Buy रेटिंग दी है और 331 रुपये का टारगेट प्राइस तय किया है। टेक्समैको के शेयर शुक्रवार को 0.15 फीसदी की गिरावट के साथ 261.65 रुपये पर बंद हुए थे।

एफडी या डेट फंड, किसमें सुरक्षित रहेंगे आपके पैसे और मिलेगा तगड़ा रिटर्न ?

परिवहन विशेष न्यूज

निवेश के लिए फिक्स्ड डिपॉजिट (FD) को काफी शानदार विकल्प माना जाता है। इसमें आपके पैसे सुरक्षित रहेंगे साथ ही तय रिटर्न मिलने की गारंटी भी रहती है। इसी तरह डेट फंड में भी कम रिस्क के साथ गारंटीड रिटर्न मिलता है। हालांकि दोनों में निवेश के कुछ फायदे और नुकसान भी हैं। आइए इनके बारे में विस्तार से जानते हैं।

नई दिल्ली। कोई भी शख्स निवेश करने से पहले अमूमन दो बातों पर गौर करता है। पहला, उसके पैसे सुरक्षित रहेंगे या नहीं और दूसरा, उसे रिटर्न कितना मिलेगा। अगर सुरक्षित निवेश की बात करें, तो आज भी सबसे अधिक भरोसा फिक्स्ड डिपॉजिट पर रहता है। हालांकि, डेट फंड भी कम जोखिम वाले निवेश माने जाते हैं।

आइए जानते हैं कि एफडी और डेट फंड में निवेश के लिए कौन-सा बेहतर है और आपको किसमें ज्यादा रिटर्न मिलेगा।

FD में निवेश के फायदे और नुकसान

एफडी की सबसे अच्छी बात है कि आपकी पूंजी सुरक्षित रहती है और आपको गारंटीड रिटर्न भी मिलता है। यही वजह है कि अधिकांश लोग एफडी में निवेश करते हैं। इसमें बड़ी संख्या रिटायर्ड कर्मचारियों की रहती है, जो रिटायरमेंट के बाद एकमुश्त मिले पैसों की एफडी कर देते हैं।

लेकिन, एफडी के साथ दिक्कत यह है कि इसमें कई दूसरे निवेशों के मुकाबले कम ब्याज मिलता है। ऐसी नौबत आने का खतरा रहता है, जब एफडी का ब्याज मुद्रास्फीति को भी मात नहीं देता। इसका सीधा मतलब आपके मूलधन का नुकसान होता है।

देश में ज्यादातर सरकारी बैंक एफडी पर 6.5 फीसदी की दर सालाना ब्याज देते हैं। प्राइवेट बैंकों की बात करें, तो यह आंकड़ा 7 फीसदी के आसपास रहता है। वहीं, पिछले पांच साल के दौरान देश में औसत सालाना महंगाई दर पांच फीसदी या इससे अधिक ही रही। इस हिसाब से एफडी का नेट रिटर्न नाममात्र ही नजर आएगा।

डेट फंड में कैसा रहेगा निवेश

डेट फंड असल में म्यूचुअल फंड की ही स्कीम होती है। लेकिन, इसमें इक्विटी मार्केट के बजाय कॉरपोरेट बॉन्ड, गवर्नमेंट बॉन्ड और मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट जैसे फिक्स्ड इनकम असेट्स शामिल होते हैं, जिससे एफडी की तरह सुरक्षित पूंजी के साथ तय रिटर्न सुनिश्चित किया जाता है।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (AMFI) का डेटा बताता है कि मीडियम ड्यूरेशन वाले टॉप 5 डेट फंड्स के डायरेक्ट प्लान का 5 साल का औसत सालाना रिटर्न काफी अच्छा रहा है। तकरीबन 7.41 फीसदी से लेकर 9.55 फीसदी। कम अवधि वाले डेट फंड ज्यादा सुरक्षित और स्थिर रिटर्न देने वाले समझे जाते हैं। उनका भी 5 साल का औसत सालाना रिटर्न 7.46 फीसदी से 8.25 फीसदी रहा।

एफडी अच्छा है या डेट फंड ?

यह पूरी तरह से आपकी जरूरत और सहूलियत पर निर्भर करता है। हालांकि, कुछ मामलों में एफडी की तुलना में डेट फंड्स बेहतर हैं। डेट फंड्स में लिक्विडिटी अधिक होती है। इसका मतलब कि आप जरूरत पड़ने पर अपनी यूनिट्स बेचकर पैसे निकाल सकते हैं। इसमें एफडी की तरह की कोई पेनल्टी नहीं देनी पड़ती।

अगर आपका फोकस शत-प्रतिशत पूंजी सुरक्षित रखने पर है, तो आप एफडी में निवेश कर सकते हैं। लेकिन, महंगाई दर को मात देने के लिए आप अपनी रकम का कुछ हिस्सा डेट फंड में भी डाल सकते हैं। हालांकि, आप लंबी अवधि वाले डेट फंड्स के मुकाबले कम अवधि वाले फंड्स पर दांव लगाना चाहिए, क्योंकि ये अधिक स्थिर होते हैं।

कभी इंटरनेट की दुनिया में रेडिफ का था जलवा, अब बिकने की आई खबर

रेडिफ का इंफीबीम एवेन्यूज द्वारा अधिग्रहण किया गया, रेडिफ को इन्फ़ीबीम एवेन्यूज ने खरीदा है जिसकी शुरुआत 2007 में विशाल मेहता ने की थी। इंफीबीम ने देश की सबसे पुरानी इंटरनेट फर्मों में से एक रेडिफ में 54 फीसदी हिस्सेदारी खरीदने पर सहमति जताई है। इंफीबीम ने एक रेगुलेटरी फाइलिंग में बताया कि उसने रेडिफ में करीब 50 करोड़ रुपये का निवेश किया है जो इक्विटी और डेट में बराबर तब्दील होंगे।

नई दिल्ली। भारत की सबसे पुरानी इंटरनेट फर्म है, रेडिफ (Rediff)। इसके साथ लाखों लोगों की यादें जुड़ी हैं। इसकी नींव में अजीत बालकृष्णन (Ajit Balakrishnan) ने रखी थी। रेडिफ ने काफी कम वक्त में अच्छे-खासे यूजर बना लिए। यह न्यूज, ईमेल और ऑनलाइन शॉपिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने वाले देश के शुरुआती पोर्टल में एक है। लेकिन, अब रेडिफ के बिकने की खबर आ रही है। गुजरात की फिनटेक कंपनी इन्फीबीम एवेन्यूज ने रेडिफ (Rediff acquired by Infibeam Avenues) में 54 फीसदी हिस्सेदारी खरीदी है।

रेडिफ का शुरुआती सफर

जब 1996 में रेडिफ की शुरुआत हुई, तो उस वक्त देश में गिने-चुने लोगों के पास ही इंटरनेट एक्सेस था। रेडिफ ने अच्छी क्वॉलिटी की सर्विस देकर जल्द ही यूजर्स के बीच अपनी पहचान बना ली। इसके Rediffmail और Rediff Shopping का इस्तेमाल काफी ज्यादा होता था। उस वक्त रेडिफ शॉपिंग पर इलेक्ट्रॉनिक्स और दूसरे उपकरण बिकते थे।

कायम नहीं रहा दबदबा

रेडिफ.कॉम ने अप्रैल 2001 में इंडिया अब्रॉड अखबार को खरीदा। फिर 2010 में मोबाइल प्लेटफॉर्म के लिए ईमेल सेवा रेडिफमेल एनजी लॉन्च की। इसके दो साल बाद रेडिफ न्यूज के लिए एंड्रॉइड ऐप भी लॉन्च किया। उस वक्त रेडिफ में 300 से ज्यादा लोग काम करते थे। इसके मुख्यालय मुंबई में था और दूसरी शाखाएं बेंगलुरु, नई दिल्ली और न्यूयॉर्क तक में फैली हुई थी।

रेडिफ अमेरिकी शेयर बाजार में लिस्ट भी थी। लेकिन, अप्रैल 2016 में कंपनी ने डीलिस्ट होने का फैसला किया। उसका कारोबार अच्छा नहीं चल रहा था। आमदनी के मुकाबले उसकी लागत भी काफी बढ़ गई थी। कुल मिलाकर कंपनी की वित्तीय हालत काफी खस्ताहाल थी।

कैसे बिका रेडिफ

रेडिफ को Infibeam Avenues ने खरीदा है, जिसकी शुरुआत 2007 में विशाल मेहता ने की थी। इंफीबीम ने देश की सबसे पुरानी इंटरनेट फर्मों में से एक रेडिफ में 54 फीसदी हिस्सेदारी खरीदने पर सहमति जताई है। इंफीबीम ने एक रेगुलेटरी फाइलिंग में बताया कि उसने रेडिफ में करीब 50 करोड़ रुपये का निवेश किया है, जो इक्विटी और डेट में बराबर तब्दील होंगे। इंफीबीम को इन्वेस्टमेंट के बदले 54 फीसदी शेयरहोल्डिंग मिलेगी। इन्फीबीम का कहना है कि वह सौदे को 90 दिन के भीतर खत्म करना चाहती है।

इन्फीबीम ने क्यों की डील

इन्फीबीम का कहना है कि इस सौदे के जरिए वह पेमेंट, ई-कॉमर्स और क्लाउड सर्विसेज के लिए एक साझा इकोसिस्टम बनाना चाहती है। उसका इरादा यूजर्स को क्रेडिट, बीमा और निवेश उत्पाद बेचने के लिए रेडिफमनी प्लेटफॉर्म का लाभ उठाना है। रेडिफ को फिलहाल हर महीने लगभग 38 मिलियन ऑनलाइन विजिटर मिलते हैं। रेडिफ ने वित्त वर्ष 2023-24 में 36 करोड़ रुपये का सालाना कारोबार किया।

इस सौदे से निवेशकों में भी जोश दिखा। शुक्रवार (2 अगस्त) को बीएसई पर 4.87 फीसदी बढ़कर 32.49 रुपये पर बंद हुए, जबकि सेंसेक्स में लगभग 1.1 फीसदी की गिरावट आई थी। इन्फीबीम ने पिछले एक साल में 120 फीसदी का बंपर रिटर्न दिया है। हालांकि, पिछले 6 महीने के दौरान इसके स्टॉक में 11 फीसदी गिरावट आई है।

75 साल बाद भी अमेरिका से पीछे होगा भारत, प्रति व्यक्ति आय बढ़ाना सबसे बड़ी चुनौती

पिछले कुछ साल में भारत की अर्थव्यवस्था काफी तेजी से बढ़ी है। केंद्र सरकार ने 2047 तक देश को विकसित बनाने का लक्ष्य रखा है। हालांकि भारत के सामने बड़ी समस्या प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने की रहेगी। वर्ल्ड बैंक का कहना है कि भारत जैसे 100 विकासशील देश मिडिल इनकम ट्रैप में फंस सकते हैं और उनके लिए अमेरिका के बराबर प्रति व्यक्ति आय हासिल करना काफी मुश्किल होगा।

नई दिल्ली। भारत आर्थिक तरक्की की राह पर तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन, प्रति व्यक्ति आय बढ़ाना देश के लिए बड़ी समस्या है। विश्व बैंक (World Bank) ने भी अपनी रिपोर्ट में यही चिंता जताई है। उसका कहना है कि भारत समेत 100 से अधिक देश हाई-इनकम वाले देश बनने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उन्हें कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

World Development Report 2024: The Middle Income Trap रिपोर्ट के मुताबिक, भारत को अमेरिका के एक चौथाई प्रति व्यक्ति आय के स्तर तक पहुंचने में भी करीब 75 साल लगेंगे। इंडोनेशिया भी लगभग 70 साल का समय लेगा। हालांकि, चीन इस उपलब्धि को करीब 10 साल में ही हासिल कर सकता है।

मिडिल इनकम ट्रैप बड़ी समस्या

वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट ने पिछले 50 वर्षों के सबक का हवाला दिया है। इसमें पाया गया है कि जैसे-जैसे देश अमीर होते जाते हैं, वे आम तौर पर प्रति व्यक्ति वार्षिक अमेरिकी जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के 'जाल' में फंस जाते हैं। यह फिलहाल 8,000 अमेरिकी डॉलर के बराबर है। वर्ल्ड बैंक ने मध्यम आय वाले देशों के रूप में वर्गीकृत करने की जो सीमा बनाई है, यह उसके मध्य में है।

विकासशील देशों में चुनौतियों का पहाड़

2023 के अंत में 108 देशों को मध्यम आय के रूप में वर्गीकृत किया गया था। इनमें से प्रत्येक की प्रति व्यक्ति वार्षिक जीडीपी 1,136 अमेरिकी डॉलर से 13,845 अमेरिकी डॉलर के बीच थी। ये देश छह अरब लोगों का घर हैं, मतलब कि दुनिया की 75 फीसदी इन्हीं 6 देशों में गुजर-बसर करती है।

यहां हर तीन में से दो लोग अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं। आगे की राह देखें, तो अतीत के मुकाबले चुनौतियां और भी ज्यादा कड़ी हैं। इन देशों में आबादी और कर्ज तेजी से बढ़ रहा है। भू-राजनीतिक और व्यापार से जुड़ी दिक्कतों में भी इजाफा हो रहा है। इनके सामने पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना आर्थिक तरक्की की रफ्तार बढ़ाने की चुनौती भी है।

इंटेल के शेयरों में तबाही: 26 फीसदी गिरे चिपमेकर कंपनी के स्टॉक, निवेशकों के करोड़ों रुपये स्वाहा

अमेरिकी शेयर बाजार में शुक्रवार को इंटेल के स्टॉक 26 फीसदी से ज्यादा लुढ़क गए। यह पिछले पांच दशक में इंटेल के शेयरों का सबसे खराब प्रदर्शन है। इससे पहले 1974 में इंटेल के स्टॉक ने एक दिन में 31 फीसदी का गोता लगाया था। उस वक्त कंपनी को लिस्ट हुए सिर्फ 3 ही साल हुए थे। इंटेल के तीसरी तिमाही के नतीजे हद से ज्यादा खराब रहे थे।

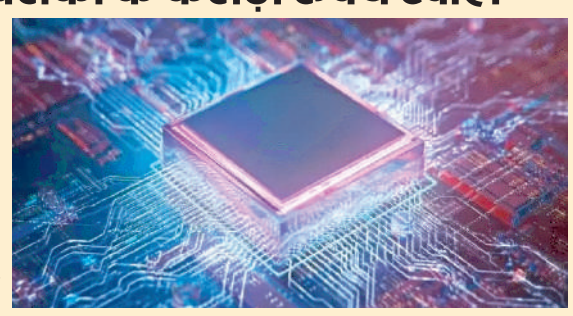

नई दिल्ली। अमेरिकी चिप निर्माता इंटेल (Intel) ने कई सालों तक मार्केट में एकछत्र राज किया। लेकिन, अब कंपनी शायद अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। एनवीडिया और क्वालकॉम जैसे प्रतिद्वंद्वी कंपनियों से उसे कड़ी चुनौती मिल रही है। कंपनी एआई प्रोसेसर के मामले में भी कोई बड़ी तरक्की नहीं कर पा रही। उसके दूसरी तिमाही के नतीजे भी बेहद निराशाजनक रहे।

इंटेल के शेयरों का बुरा हाल

इन सबका असर इंटेल के शेयरों पर भी दिखा। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार में इंटेल के स्टॉक 26 फीसदी से ज्यादा लुढ़क गए। यह पिछले पांच दशक में इंटेल के शेयरों का सबसे खराब प्रदर्शन है। इससे पहले 1974 में इंटेल के स्टॉक ने एक दिन में 31 फीसदी का गोता लगाया था। उस वक्त कंपनी को शेयर मार्केट में लिस्ट हुए सिर्फ 3 ही साल हुए थे।

10 के निचले स्तर पर इंटेल

शुक्रवार को इंटेल के स्टॉक (Intel Share Price) 26.06 फीसदी टूटकर 21.48 डॉलर (1,799 रुपये) पर आ गई। यह पिछले एक दशक में कंपनी के शेयरों का सबसे निचला स्तर है। टूट गई और इसके शेयर 10 साल (2013 के बाद) के निचले स्तर पर पहुंच गए। इंटेल के शेयरों ने पिछले 6 महीने में करीब 50 फीसदी और पांच साल में 55 फीसदी का नेगेटिव रिटर्न दिया है। इससे निवेशकों को करोड़ों का नुकसान हुआ है।

छंटनी करने का भी एलान

इंटेल को तीसरी तिमाही में 1.2 अरब डॉलर का घाटा हुआ है। कंपनी ने घाटा और कामकाजी खर्च करने के लिए करीब 18 हजार कर्मचारियों की छंटनी करने का फैसला किया है। उसने चौथी तिमाही के लिए निवेशकों को दिए जाने वाले डिविडेंड को भी निरस्त कर दिया। कंपनी अपने खर्चों में कुल 20 अरब डॉलर की कमी लाने की योजना बना रही है।

'छोटे किसान भारत की सबसे बड़ी ताकत', पीएम मोदी बोले- कई देशों में काम आ सकता है हमारा मॉडल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कृषि अर्थशास्त्रियों के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारत वैश्विक खाद्य संकट के समाधान के लिए काम कर रहा है। भारत मिलेट्स का सबसे बड़ा उत्पादक है। जिन्हें दुनिया सुपरफूड कहती है और उसे हमने श्रीअन्न की पहचान दी। हमारे अन्न को औषधीय प्रभावों के साथ इस्तेमाल करने का पूरा आयुर्वेद विज्ञान है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कृषि अर्थशास्त्रियों के सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक खाद्य सुरक्षा के साथ ही पोषण को भी जरूरी बताया। इसके लिए प्राकृतिक खेती पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि छोटे किसान भारत की सबसे बड़ी ताकत हैं। यहां के 90 प्रतिशत किसानों के पास बहुत कम जमीन है। कई विकासशील देशों की भी ऐसी ही स्थिति है। इसलिए हमारा मॉडल कई देशों के काम आ सकता है।

पांच दिन चलेगा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में कृषि अर्थशास्त्रियों का यह 32वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है, जो पांच दिनों तक चलेगा। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए पीएम ने कहा कि कृषि हमारी आर्थिक नीतियों के केंद्र में है। इस दौरान कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी मौजूद थे।

दूध, दाल व मसालों का भारत सबसे बड़ा उत्पादक

भारत में पहला कृषि अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 1958 में हुआ था। पीएम मोदी ने 65 वर्ष पहले के उस दौर को याद करते हुए कहा कि तब भारत आजाद ही हुआ था और हमारी खाद्य सुरक्षा दुनिया के लिए बड़ी चुनौती थी, मगर आज हम खाद्य अधिशेष देश हैं। दूध, दाल एवं मसालों का सबसे बड़ा तथा खाद्यान्न, फल सब्जी, कपास, चीनी, चाय एवं मछली का दूसरा बड़ा उत्पादक हैं।

बजट में कृषि के सतत विकास पर फोकस

खाद्य के साथ पोषण सुरक्षा के लिए भी हम दुनिया को समाधान दे रहे हैं। पीएम ने कहा कि हम बड़े पैमाने पर प्राकृतिक खेती को प्रोन्नत कर रहे हैं। इसके परिणाम भी अच्छे आ रहे हैं। इस साल के बजट में कृषि के सतत विकास पर बड़ा फोकस है। हमारा जोर शोध पर है। दस सालों में हमने जलवायु के अनुकूल फसलों की 19 सौ प्रजातियां दी हैं।

सुपरफूड के रूप में उभरा काला चावल

पीएम ने कहा कि चावल की कुछ किस्में ऐसी हैं, जिन्हें 20 प्रतिशत कम पानी चाहिए। काला चावल सुपरफूड के रूप में उभरा है। हम पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रण के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इससे कृषि और पर्यावरण दोनों को लाभ हो रहा है। कृषि की चुनौतियों का जिक्र करते हुए पीएम ने कहा कि पानी की कमी और जलवायु परिवर्तन के साथ ही पोषण बड़ी चुनौती है। इसका समाधान भारत के पास है।

देश में 700 से अधिक कृषि विज्ञान केंद्र

पीएम ने कहा कि हम मिलेट्स के सबसे बड़े उत्पादक हैं। अपने इस बास्केट को दुनिया के साथ साझा करना चाहते हैं। भारत में कृषि शिक्षा और अनुसंधान का मजबूत इकोसिस्टम है। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च के ही सौ से ज्यादा रिसर्च संस्थान हैं। कृषि और संबंधित विषयों की पढ़ाई के लिए पांच सौ से ज्यादा कॉलेज हैं। सात सौ से ज्यादा कृषि विज्ञान केंद्र हैं जो किसानों तक नई तकनीक पहुंचाने में मदद करते हैं।

प्राचीन कृषि परंपरा का जिक्र भी किया

पीएम ने अर्थशास्त्रियों को भारत की प्राचीन कृषि परंपरा के बारे में भी बताया। कहा कि भारत जितना प्राचीन है, उतनी ही पुरानी कृषि को लेकर हमारी मान्यताएं हैं। खाद्यान्न और पोषण पर आज इतनी चर्चा हो रही है, किंतु हजारों वर्ष पहले हमारे ग्रंथों में कहा गया है कि सभी पदार्थों में अन्न श्रेष्ठ है। इसीलिए अन्न को औषधीय प्रभावों के साथ इस्तेमाल करने का पूरा आयुर्वेद विज्ञान है, जो भारतीय जीवन का हिस्सा है।

ग्रंथ का किया जिक्र

पीएम ने कहा कि दो हजार वर्ष पहले का ग्रंथ कृषि पराशर वैज्ञानिक खेती का दस्तावेज है। इसमें कृषि पर ग्रहों एवं नक्षत्रों का प्रभाव, बादलों के प्रकार, वर्षा को नापने का तरीका, मौसम पूर्वानुमान, जैविक खाद, पशुओं की देखभाल, बीज की सुरक्षा, भंडारण आदि अनेक विषयों पर विस्तार से बताया गया है।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 16 पर एक ट्रक के कुचलने से 2 कावडिया सहित 3 लोगों की मौत हो गई है

मनोरंजन सासमल, स्टेटे हेड उडीशा, भुबनेश्वर : गजाम जिले के खल्लीकोट में डिमिरिया विलेज स्ट्रीट पर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 16 पर एक ट्रक के कुचलने से 2 काउडिया सहित 3 लोगों की मौत हो गई है।मृतकों में एक कौड़िया का नाम रंजी नायक है, जबकि दूसरे की पहचान नहीं हो पायी है । वे बानपुर क्षेत्र के रहने वाले हैं। एक अन्य मृतक ए बनमाली पात्र है ।रणजी नायक और उनके अन्य कौड़िया साथी रुशिकुल्या नदी से पानी लेकर बाणपुर जाते समय दुर्घटना का शिकार हो गये। उनकी मौके पर ही मौत हो गई । दूसरी ओर खल्लीकोट अस्पताल में बनमाली पात्र को मृत घोषित कर दिया गया। ट्रक के ऊपर तीन लोगों के सवार होने से ट्रक पलट गया। हालांकि ड्राइवर को कुछ नहीं हुआ । खल्लीकोट पुलिस ने चालक को हिरासत में लिया और ट्रक जब्त कर लिया। ट्रक आंध्र प्रदेश से भुवनेश्वर जा रहा था ।

पूर्व पीसीसी अध्यक्ष जयदेव जेना ने राहुल गांधी और सोनिया गांधी को पत्र लिखकर तुरंत पीसीसी अध्यक्ष नियुक्त करने का प्रस्ताव दिया

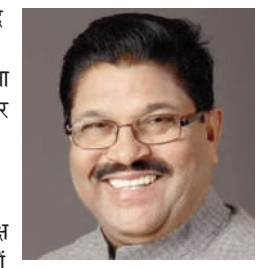

भुबनेश्वर : पीसीसी कमेटी भंग होने के बाद ओडिशा कांग्रेस निष्क्रिय हो गई है । कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व पीसीसी अध्यक्ष जयदेव जेना ने राहुल गांधी और सोनिया गांधी को पत्र लिखकर तुरंत पीसीसी अध्यक्ष नियुक्त करने का प्रस्ताव दिया है । पार्टी में अफरा-तफरी मची हुई है । जयदेव ने पत्र में अनुरोध किया है कि जो व्यक्ति पार्टी को आगे ले जाएगा उसे तुरंत पीसीसी अध्यक्ष नियुक्त किया जाए । उन्होंने पत्र में कांग्रेस नेताओं को एकजुट करने का भी प्रस्ताव दिया । उधर, कांग्रेस विधायकों के नेता रामचन्द्र कदमत ने कहा, पीसीसी अध्यक्ष ऐसे व्यक्ति को जिम्मेदारी देंगे जो आलाकमान के लिए योग्य हो । कदम ने कहा कि हाईकमान इस बात पर विचार कर रहा है कि जो भी टीम को संगठित कर सके उसे जिम्मेदारी दी जाए ।

डॉ. लॉजिस्टिक्स: भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन पर जागरूकता बढ़ाएं

डॉ. अंकुर शरण

वर्तमान समय में लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन के क्षेत्र में तेजी से बदलाव और विकास हो रहा है। युवा शक्ति को इस क्षेत्र में तैयार करना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकें। भारत सरकार कई प्रमुख पहल कर रही है जैसे राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति, प्रधानमंत्री गतिशक्ति योजना, और मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क का विकास। ये पहलें लॉजिस्टिक्स को अधिक कुशल और प्रभावी बनाने में मदद कर रही हैं।

दुनिया भर में लॉजिस्टिक्स को डिजिटलाइजेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और ग्रीन लॉजिस्टिक्स जैसी नई तकनीकों से उन्नत किया जा रहा है। वैश्विक स्तर पर लॉजिस्टिक्स का महत्व बढ़ रहा है क्योंकि यह किसी भी उद्योग की रीढ़ है। इन अवसरों और सरकारी प्रयासों के साथ, युवा पेशेवरों के लिए लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन में करियर बनाने के कई विकल्प मौजूद हैं, जिससे वे न केवल अपनी व्यक्तिगत उन्नति कर सकते हैं बल्कि देश के आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में करियर के अवसर

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में करियर के अवसर आज के युवा aspirants के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है और इसमें कई प्रकार की नौकरियों और करियर के विकल्प मौजूद हैं। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए जा रहे हैं जो युवा aspirants को प्रेरित करेंगे:

विविधता और विकास:

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट एक ऐसा क्षेत्र है जो उद्योगों की विविधता को संभालता है। चाहे वह निर्माण, खुदरा, स्वास्थ्य सेवा, या ई-कॉमर्स हो, सभी को लॉजिस्टिक्स की आवश्यकता होती है। यह क्षेत्र निरंतर विकासशील है और इसमें नई तकनीकों और प्रक्रियाओं के कारण हमेशा सीखने और आगे बढ़ने के अवसर मिलते रहते हैं।

रोजगार के अवसर:

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में कई प्रकार की नौकरियों के अवसर हैं, जैसे कि वेयरहाउस मैनेजर, सप्लाई चेन एनालिस्ट, लॉजिस्टिक कोऑर्डिनेटर, ट्रांसपोर्टेशन मैनेजर, और इन्वेंट्री प्लानर। हर नौकरी का अपना महत्व है और ये सभी मिलकर सप्लाई चेन को सुचारू रूप से चलाते हैं।

कौशल विकास:

इस क्षेत्र में काम करने से विभिन्न कौशलों का विकास होता है, जैसे कि समस्या समाधान, संचार कौशल, डेटा एनालिसिस, और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट। ये कौशल न केवल पेशेवर जीवन में बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी सहायक होते हैं।

उन्नति के अवसर:

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में उन्नति के कई अवसर होते हैं। एक इंट्री-लेवल पोजीशन से शुरू होकर आप मैनेजमेंट और सीनियर लेवल पोजीशन्स तक पहुंच सकते हैं। सही अनुभव और शिक्षा के साथ, इस क्षेत्र में उन्नति की संभावना बहुत अधिक है।

सामाजिक योगदान:

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट का सामाजिक योगदान भी महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि उत्पाद और सेवाएँ समय पर उपभोक्ताओं तक पहुँचें, जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है। इस क्षेत्र में काम करने से आप समाज के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

युवा aspirants के लिए लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट एक रोमांचक और संतोषजनक करियर विकल्प हो सकता है। इसमें न केवल विविधता और विकास के अवसर हैं, बल्कि यह समाज के लिए भी एक महत्वपूर्ण योगदान देने का मौका देता है। इस क्षेत्र में अपने करियर की शुरुआत करें और अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएं!

प्रश्न 1: लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में करियर कैसे शुरू करें?

उत्तर: लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में करियर शुरू करने के लिए सबसे पहले आपको संबंधित क्षेत्र में शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करनी होगी। आप बीबीए, एमबीए, या लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में विशेष पाठ्यक्रम कर सकते हैं। इसके अलावा, इंटर्नशिप और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना महत्वपूर्ण है। यह न केवल आपको व्यावहारिक अनुभव देता है, बल्कि नेटवर्किंग के अवसर भी प्रदान करता है।

प्रश्न 2: लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में किन-किन क्षेत्रों में नौकरियाँ उपलब्ध हैं?

उत्तर: इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की नौकरियाँ उपलब्ध हैं, जैसे:

1. वेयरहाउस मैनेजर
2. सप्लाई चेन एनालिस्ट
3. लॉजिस्टिक कोऑर्डिनेटर
4. ट्रांसपोर्टेशन मैनेजर
5. इन्वेंट्री प्लानर
6. प्रोक्योरमेंट स्पेशलिस्ट
7. शिपिंग और रसीद अधिकारी
8. कस्टमर सर्विस रिप्रेजेंटेटिव

प्रश्न 3: इस क्षेत्र में सफलता पाने के लिए किन कौशलों की आवश्यकता होती है?

उत्तर: लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में सफलता पाने के लिए निम्नलिखित कौशलों की आवश्यकता होती है:

1. समस्या समाधान कौशल
2. प्रभावी संचार कौशल
3. डेटा विश्लेषण कौशल
4. प्रोजेक्ट मैनेजमेंट
5. समय प्रबंधन
6. तकनीकी ज्ञान और सॉफ़्टवेयर की समझ
7. टीमवर्क और नेतृत्व कौशल

प्रश्न 4: इस उद्योग में मुख्य चुनौतियाँ क्या हैं?

उत्तर: इस उद्योग में निम्नलिखित मुख्य चुनौतियाँ हो सकती हैं:

1. बदलती उपभोक्ता मांग और उनकी अपेक्षाएँ
2. आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, जैसे प्राकृतिक आपदाएँ, महामारी, या राजनीतिक अस्थिरता
3. लागत प्रबंधन और लाभप्रदता बनाए रखना
4. तकनीकी उन्नति और इसके साथ तालमेल बैठाना
5. पर्यावरणीय मुद्दों और स्थिरता पर ध्यान देना
6. सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन
7. वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के साथ समन्वय

प्रश्न 5: लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में उन्नति के क्या अवसर हैं?

उत्तर: इस क्षेत्र में उन्नति के कई अवसर हैं। आप इंट्री-लेवल पोजीशन से शुरू कर सकते हैं और धीरे-धीरे मैनेजमेंट और सीनियर लेवल पोजीशन्स तक पहुँच सकते हैं। उन्नति के लिए अनुभव, शिक्षा और अतिरिक्त प्रमाणपत्रों का होना आवश्यक है। इसके अलावा, नेतृत्व कौशल और नवाचार के प्रति जागरूकता भी महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 6: इस क्षेत्र में कार्य करने के लाभ क्या हैं?

उत्तर: लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में कार्य करने के निम्नलिखित लाभ हैं:

विविध करियर विकल्प और भूमिकाएँ
उच्च वेतन और लाभकारी पैकेज
उन्नति और विकास के अवसर
नई तकनीकों और प्रक्रियाओं के साथ काम करने का मौका
सामाजिक योगदान और समुदाय के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाना

प्रश्न 7: इस क्षेत्र में नवीनतम प्रवृत्तियाँ और उन्नतियाँ क्या हैं?

उत्तर: लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में नवीनतम प्रवृत्तियाँ और उन्नतियाँ निम्नलिखित हैं:

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का उपयोग
इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) का एकीकरण
ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग
स्वचालित वेयरहाउस और रोबोटिक्स
ई-कॉमर्स और ओम्नीचैनल सप्लाई चेन का विकास
पर्यावरणीय स्थिरता और ग्रीन लॉजिस्टिक्स

लॉजिस्टिक और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में करियर बनाने के ये महत्वपूर्ण बिंदु और चुनौतियाँ युवा aspirants को प्रेरित करेंगी और उन्हें इस क्षेत्र में सफल होने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेंगी।

भारत सरकार लॉजिस्टिक उद्योग के लिए क्या कर रही है

भारत सरकार लॉजिस्टिक उद्योग को प्रोत्साहित करने और इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। यहाँ कुछ प्रमुख पहलें दी जा रही हैं:

1. राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (National Logistics Policy)

राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति का उद्देश्य भारत की लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना और इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। यह नीति कई प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करती है, जैसे बुनियादी ढांचा विकास, डिजिटल लॉजिस्टिक्स, और स्किल डेवलपमेंट।

2. मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (Multimodal Logistics Parks)

भारत सरकार ने देशभर में मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क स्थापित करने की योजना बनाई है। ये पार्क विभिन्न परिवहन मोड्स (जैसे सड़क, रेल, और जलमार्ग) को जोड़कर लॉजिस्टिक्स की क्षमता और प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं। यह पहल लॉजिस्टिक नेटवर्क को अधिक समग्र और कुशल बनाती है।

3. प्रधानमंत्री गतिशक्ति योजना (PM GatiShakti)

प्रधानमंत्री गतिशक्ति योजना एक राष्ट्रीय मास्टर प्लान है जिसका उद्देश्य बुनियादी ढांचे का व्यापक विकास करना है। इस योजना के तहत 100 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया जा रहा है ताकि सड़क, रेल, वायु, और जलमार्ग को एकीकृत किया जा सके और लॉजिस्टिक्स लागत को कम किया जा सके।

4. डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (Dedicated Freight Corridors)

डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर परियोजना का उद्देश्य माल परिवहन के लिए विशेष रूप से समर्पित रेल कॉरिडोर स्थापित करना है। यह परियोजना माल ढुलाई की गति और दक्षता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

5. सागरमाला परियोजना (Sagarmala Project)

सागरमाला परियोजना का उद्देश्य भारत के समुद्री परिवहन नेटवर्क को सुधारना और बंदरगाहों का आधुनिकीकरण करना है। इसके तहत बंदरगाहों के पास लॉजिस्टिक हब विकसित किए जा रहे हैं और जलमार्गों का उपयोग बढ़ाया जा रहा है।

6. भारतमाला परियोजना (Bharatmala Project)

भारतमाला परियोजना का उद्देश्य देशभर में सड़क नेटवर्क को सुधारना और नए हाईवे और एक्सप्रेसवे बनाना है। इससे लॉजिस्टिक परिवहन की गति और दक्षता बढ़ेगी।

7. डिजिटल लॉजिस्टिक्स

भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया पहल के तहत लॉजिस्टिक क्षेत्र में डिजिटलाइजेशन को बढ़ावा दिया है। ई-वे बिल सिस्टम, जीएसटी पोर्टल, और अन्य डिजिटल टूल्स का उपयोग लॉजिस्टिक प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी और कुशल बना रहा है।

8. लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक (Logistics Performance Index)

सरकार ने राज्यों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक (LPI) लॉन्च किया है। यह सूचकांक राज्यों को अपनी लॉजिस्टिक सेवाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करता है और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।

9. कौशल विकास और प्रशिक्षण (Skill Development and Training)

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में कौशल विकास और प्रशिक्षण के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। सरकार ने कई प्रशिक्षण संस्थानों और आईटीआई के माध्यम से लॉजिस्टिक क्षेत्र में स्किल डेवलपमेंट को प्रोत्साहित किया है।

भारत सरकार की ये पहलें लॉजिस्टिक उद्योग को अधिक प्रभावी, समन्वित और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये न केवल लॉजिस्टिक्स लागत को कम करेंगी बल्कि उद्योग के समग्र विकास और रोजगार सृजन में भी सहायक सिद्ध होंगी।

डॉ. लॉजिस्टिक्स

डॉ. लॉजिस्टिक्स एक पहल है जो आज की दुनिया में लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट का अवलोकन साझा करती है। यह पहल आपको इस क्षेत्र की गहन समझ और आत्मविश्वास प्रदान करती है ताकि आप इसे अपने करियर के रूप में चुन सकें। डॉ. लॉजिस्टिक्स के माध्यम से, आपको काम करने के कई अवसर मिलते हैं और आप इस उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार हो सकते हैं

ankur.supplychain@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023